सितम्बर 2004
Rs. 12 /-
चन्दामामा

ऐसा विश्वास किया जाता है कि यहाँ के सात तटीय
मन्दिरों में से छः मन्दिरों को समुद्र निगल गया।
आप भाग्यशाली हैं।

मनमोहक मामल्लपुरम तटीय मन्दिर दक्षिण भारत के प्राचीनतम मन्दिरों में से एक है। आठवीं शताब्दी के पूर्ववर्ती काल में निर्मित यह तमिलनाडु के सर्वाधिक दर्शनीय स्मारकों में से एक है। मामल्लपुरम को अन्य समान रूप से लोकप्रिय स्मारकों पर गर्व है जैसे अर्जुन की तपस्या (विश्व की विशालतम नक्काशी मूर्तिकला), पाँच रथ तथा गुफा-मन्दिर। मामल्लपुरम का भ्रमण करें। यह तमिलनाडु में चेन्नई से ५५ कि.मी. दूर है।

experience yourself

For details on TTDC's attractive package tours with excellent accommodation and transport facilities, please contact: TTDC, Tamilnadu Tourism Complex, Wallajah Road, Chennai - 600 002, Tamilnadu, India. Ph: 91-044-25388785 / 25361640. Fax: 91-044-25382772. E-mail: ttdc@md3.vsnl.net.in Website: www.tamilnadutourism.org For online bookings, www.ttdconline.com Call: Chennai 91-044-25389857, 25383333 New Delhi 91-011-23745427 Mumbai 91-022-24110118 Goa 91-0832-2226390 Bangalore 91-080-22286181 Hyderabad 91-040-27667492 Kolkata 91-033-22437432

प्रवेश

& चन्दामामा

ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

बम्पर पुरस्कार

एसर कम्प्यूटर

प्रथम पुरस्कार

कैमराज

द्वितीय पुरस्कार

कैलकुलेटर्स

न्यूट्रीन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, जो मई २००४ में आरम्भ की गयी, छः महीनों तक जारी रहेगी। निम्नलिखित प्रश्न तुम्हें रोचक लगेंगे और तुम्हारे खेल सम्बन्धी ज्ञान को बढ़ायेंगे। सही उत्तरों को ढूँढ़ो, प्रवेश पत्र को भरो और इस पृष्ठ को पाँच **न्यूट्रीन चॉकोलेट एक्लेयर्स रैपर्स** के साथ अन्तिम तिथि के पहले **न्यूट्रीन - चन्दामामा प्रतियोगिता, चन्दामामा इंडिया लि., ८२, डिफेंस आफिसर्स कॉलोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७** के पते पर भेज दो।

यह अखिल भारत प्रतियोगिता है। हर महीने इस पृष्ठ को सावधानी से देखो और प्रतियोगिता में भाग लो। पुरस्कार में हर महीने क्रमशः ३ कोनिका कैमरे, १० कैलकुलेटर्स तथा ५० न्यूट्रीन मिठाई के डलिये हैं। पाँच मासिक प्रतियोगिताओं के अन्त में छठी प्रतियोगिता के लिए एक बम्पर ड्रा है और विजेता को अन्य सामान्य पुरस्कारों के अतिरिक्त एक पर्सनल कम्प्यूटर दिया जायेगा। सभी छः महीनों में भाग लेने पर ही बम्पर ड्रा में शामिल होने के लिए योग्य हो सकते हैं। बम्पर ड्रा का परिणाम डाक द्वारा दिसम्बर में घोषित किया जायेगा।

क्या तुम्हें मालूम था?

एक चैम्पियन तैराक जॉनी स्विसमूलर १९ चलचित्रों में टारजन की भूमिका आरम्भ करने से पूर्व ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक जीत चुका था।

न्यूट्रिन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता -५

प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और प्रत्येक प्रश्न के लिए दिये गये खाली स्थानों में सही उत्तर पर (✓) का निशान लगायें।

१. सन् २००० के सिडनी ओलम्पिक में महिला मैरेथन की विजेता कौन थी?

☐ नाओको ताकाहाशी ☐ मेरी-जोस पैरेक ☐ पौला इवान

२. ओलम्पिक खेलों में पुरुष वर्ग की लम्बी कूद में अधिकतम दूरी का रेकार्ड क्या है?

☐ ७.०० मी. ☐ ७.४ मी. ☐ ७.८ मी.

३. किस वर्ष ओलम्पिक खेलों में टेनिस को पदक-खेल के रूप में मान्यता दी गई?

☐ १९२६ ☐ १९८८ ☐ १९९२

४. ओलम्पिक खेलों में, सन् १९७६ से भारोत्तोलन में कितने बॉडी-वेट वर्गों (फेदर वेट, लाइट वेट आदि) को आरम्भ किया गया?

☐ ४ ☐ ६ ☐ १०

५. इस अंक में प्रकाशित न्यूट्रीन विज्ञापन में सभी एम 'M' अक्षरों की खोज करो।

☐ ९ ☐ ४ ☐ ७

<u>प्रतियोगिता के नियम:</u> ● न्यूट्रीन, चन्दामामा के कर्मचारी तथा उनके सम्बन्धी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते ● निर्णायकों का चुनाव न्यूट्रीन का एक मात्र विशेषाधिकार होगा ● केवल भारतीय मूल के १५ वर्ष से नीचे की आयु के बच्चे ही प्रतियोगिता में भाग ले सकते ● केवल न्यूट्रीन को अधिकार होगा कि वह प्रतियोगिता को और आगे बढ़ाये या पहले बन्द करे ● प्रतियोगी की आयु के प्रमाण के लिए जन्मतिथि प्रमाणपत्र मान्य होगा ● सही प्रविष्टियों में से ड्रा द्वारा विजेताओं का चुनाव होगा ● विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से सूचित किया जायेगा ● पुरस्कृत वस्तुओं के स्थान पर नकद द्वारा पूर्ति नहीं की जायेगी ● पुरस्कृत वस्तुओं की गुणवत्ता का आश्वासन सम्बद्ध उत्पादकों का होगा ● एक प्रतियोगी प्रत्येक महीने में एक प्रविष्टि भेज सकता ● वह किसी एक प्रतियोगिता में या सभी छः प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता ● प्रविष्टि पत्रों के अतिरिक्त कोई अन्य पत्र-व्यवहार नहीं स्वीकार किया जायेगा ● कूपन पर तुम्हारे हस्ताक्षर करने का अर्थ होगा कि कूपन पर दिये गये नियमों से तुम सहमत हो ● अन्तिम तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा ● यदि किसी प्रतियोगिता में सभी प्रविष्टियाँ सही नहीं हैं, तब अधिकतम सही उत्तरों के आधार पर विचार किया जायेगा और उन्हीं में से ड्रा किया जायेगा ● निर्णायकों के सभी निर्णय अन्तिम माने जायेंगे।

अन्तिम तिथि: ३० सितम्बर २००४

नाम :..

उम्र :.................. कक्षा :.................... जन्मतिथि :........................

घर का पता तथा पिन कोड ....

....

हस्ताक्षर..

KOKA NAKA

MAHA LACTO

India's largest selling sweets and toffees.

चन्दामामा

सम्पुट - १०८ सितम्बर २००४ सञ्चिका - ९

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक १३

आत्माभिमानी १९

अन्य देशों की पौराणिक कथाएँ ४२

विष्णु पुराण ४५

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

For booking space in this magazine please contact:
CHENNAI Shivaji : Ph : 044-22313637 / 22347399
Fax: 044-22312447, Mobile : 98412-77347
email : advertisements @chandamama.org
DELHI : OBEROI MEDIA SERVICES, Telefax (011) 22424184
Mobile : 98100-72961, email : a.s.oberoi@indiatimes.com

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

एक परिहार्य त्रासदी

एक किशोर बालक के साहस और चरित्र की यह एक ज्वलन्त कहानी थी, जिसने अपनी बहन के प्राण बचाये और फिर एक अन्य बच्चे की जान बचाई। जब वह तीसरी बार आग की लपटों में घुसा तो दुर्भाग्य ने उसे जकड़ लिया। उसे फिर किसी ने नहीं देखा। जब अगले बाल दिबस पर बहादुरी के पुरस्कारों की घोषणा की जायेगी तब उसका नाम शायद फिर एक बार सुनाई पड़ जाये।

एक दुर्भाग्यपूर्ण हादसे में लगभग एक सौ भोले भाले बच्चे अपने प्राण गवाँ बैठे जबकि उनका कोई कसूर नहीं था। हम कुम्भकोणम् के एक स्कूल में हाल में घटी त्रासदी के बारे में कह रहे हैं। इस हादसे के शिकार हुए अधिकांश बच्चे दस-बारह बर्ष की आयु से छोटे थे। उस समय बिद्यालय में उपस्थित बीस से कुछ अधिक अध्यापक एक की भी जान बचा न सके। हमलोगों की ओर से सम्मान पाने की पात्रता के क्रम में माता-पिता के बाद अध्यापक का ही नाम आता है। इन सबको देवों के समान आदर-भाव से देखना ही चाहिये। अध्यापक इसी प्रकार की श्रद्धा की आशा बच्चों से कर सकते हैं।

स्कूलों को बिद्यालय कहा जाता है, पूजा-स्थलों के बाद दूसरे स्थान पर इनकी गणना की जाती है तथा सभी संस्थाओं में इन्हें पवित्रतम माना जाता है। बिद्यालयों में भी आधारभूत सुबिधाओं का होना आवश्यक है, जिनमें सुरक्षा तथा अल्पतम आराम के साधन सम्मिलित हों। अधिकारियों का यह दायित्व हो जाता है कि वे बिद्यालयों पर इनके लिए जोर डालें।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (अप्रैल)

अंगूठी का निशान

जब जज ने कहा कि यह तो राजा की अंगूठी है और इसे चुरानेवाले को फाँसी की सजा मिलेगी, तो दोनों यात्री सकपका गये। दोनों में से किसी में हिम्मत नहीं हुई कि कहे कि अंगूठी मेरी है। अंगूठी का असली मालिक भी यह सोच कर डर रहा था कि उस समय उसके पास ऐसा कोई सबूत नहीं है जिसके आधार पर वह अपना अधिकार प्रमाणित कर सके। उसने यह भी सोचा कि हो सकता है कि राजा की अंगूठी भी ऐसी हो या इससे मिलती जुलती हो।

फिर उसके मन में एक विचार आया और उसने जज से कहा कि यह अंगूठी मेरी है और यह मुझे दहेज में मिली थी। मैंने चुराई नहीं है।

जज ने दूसरे यात्री से पूछा, ''यदि यह अंगूठी तुम्हारी है जैसा कि तुम्हारा दावा है तो तुम्हें यह कहाँ मिली?'' दूसरे यात्री ने भी यही कहा कि उसे यह अंगूठी शादी में मिली है।

जज को समझ में नहीं आया कि अब अंगूठी के असली मालिक की जाँच कैसे करें और क्या फैसला सुनायें। उसने सोचा था कि फाँसी के डर से झूठा दावा करनेवाला डर जायेगा और अपना दावा छोड़ देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

उसने सोच कर कहा कि तुम दोनों को राजा के यहाँ चलना होगा, तुम्हारा न्याय वही करेंगे।

दूसरे दिन तीनों राजा के दरबार में गये। जज ने राजा के कान में धीरे से कुछ कहा और अंगूठी देते हुए दोनों यात्रियों के झगड़े की जानकारी दी।

राजा ने अंगूठी को ध्यान से देखा। यह कुछ पुरानी और घिसी हुई थी। उसने एक-एक कर दोनों यात्रियों को अपने पास बुलाया और अंगूठी को पहनने के लिए कहा। एक यात्री की उंगली में वह बिल्कुल ठीक आई। उंगली में अंगूठी का दाग पड़ा हुआ था। लेकिन दूसरे यात्री की किसी उंगली में वह फिट नहीं आई। उसकी हर उंगली में यह छोटी हो रही थी। और उसकी किसी उंगली में अंगूठी पहनने का कोई निशान नहीं था। राजा ने अंगूठी के असली मालिक को अंगूठी देकर विदा कर दिया और दूसरे यात्री को, जो झूठा दावा कर रहा था, एक उंगली काटने की सजा सुनाई।

अविनाश यादव, S/o . डॉ.आर.पी.यादव, कक्षा छ, ज्ञानकुंज अकादमी,
वंसी बाजार, बलिया (उ.प्र.)

चांदी का दीपदान

हेलापुरी की अदालत में चांदी के एक दीपदान की चोरी का मुकद्दमा चल रहा था। जिस केशव नामक व्यक्ति के दीपदान की चोरी हो गयी थी, उसने न्यायाधीश से कहा, ''साहब, वह श्रावण में शुक्रवार का दिन था। मेरी-पत्नी ने व्रत रखा और कुछ सुहागिनियों को अपने घर बुलाया। व्रत जब पूरा हुआ और सबके सब चले गये तब उसे मालूम पड़ा कि दीपदान को किसी ने चुरा लिया है। यह चोरी किसी और ने नहीं, स्वयं माधव की पत्नी गुणवती ने की।'' यों वह कहता ही जा रहा था, तब न्यायाधीश ने उसे टोका और पूछा, ''तुम्हें कैसे संदेह हुआ कि उस दीपदान की चोरी माधव की पत्नी गुणवती ने ही की?''

''साहब, एक सप्ताह के पहले गुणवती के घर में एक जो शुभकार्य हुआ, उसमें भाग लेने मेरी पत्नी भी गयी। पूजा में रखे गये उस दीपदान को मेरी पत्नी ने पहचान लिया। कृपया वह दीपदान मुझे दिलाइये।'' केशव ने विनती की।

''इसका क्या ठोस आधार है कि वह दीपदान तुम्हारा ही है?'' न्यायाधीश ने पूछा।

''साहब, हमारे दीपदान का आकार थोड़ा-सा अलग है। वह ॐ आकार में है।'' केशव ने कहा। न्यायाधीश ने हँसते हुए कहा, ''ऐसी बात है! हमारे घर में भी ॐ आकार का एक दीपदान है।''

''साहब, यही बात मैं आपसे बताने जा रहा था। आपके टोकने की वजह से मैं बता नहीं पाया। हाल ही में मालूम हुआ कि माधव की पत्नी ने जिस दीपदान को मेरे घर से चुराया, उसे उसने आपकी पत्नी को बेच दिया। वह दीपदान अब उसके घर में नहीं, आपके घर में हैं।'' केशव ने कहा।

यह सुनकर न्यायाधिकारी और वहाँ उपस्थित सब लोग स्तब्ध रह गये। ***- नाग भैरव***

गोवर्धन का चयन

गोवर्धन धनाढ्य था। सौ एकड़ उपजाऊ खेत का वह मालिक था। साथ ही चार प्रकार के व्यापार वह चलाया करता था। इन सबकी देखभाल करे, उसके बताये कामों को ठीक तरह से करे, हर काम में उसकी मदद करे, इसके लिए उसे एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी।

यह विषय जानकर उससे मिलने सीताराम, भीम और राजा नामक तीन युवक आये।

गोवर्धन ने पहले सीताराम को बुलाया और उससे अपने बारे में बताने को कहा। सीताराम ने सविनय कहा, ''मैं पढ़ा-लिखा हूँ। संपन्न परिवार में मेरा जन्म हुआ है। पर मैं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता हूँ। आप जो भी काम सौंपेंगे, श्रद्धापूर्वक करूँगा।''

''परंतु, तुम्हें होशियारपुर जाकर धर्मराज से मिलना होगा। वह उत्तम रसोइया है। उससे वह विद्या सीखकर आना।'' गोवर्धन ने कहा।

''आपको तो एक ऐसे आदमी की जरूरत है, जो सब प्रकार से आपकी सहायता करे। पर आप तो रसोई की बात कर रहे हैं। आपकी बातें अजीब लग रही हैं,'' सीताराम ने कहा।

''इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। मैं तो घर में बना खाना ही खाता हूँ। निजी कामों पर जब मैं बाहर जाता हूँ तब मेरी पत्नी मेरे साथ थोड़े ही आयेगी। वहाँ तुम्हें ही मेरे लिए खाना बनाना होगा,'' गोवर्धन ने कहा।

''मैं रसोई बनाना नहीं जानता। पर बहुत ही कम समय में कुछ भी बनाने का कौशल रखता हूँ। रसोई बनाने होशियारपुर जाने की क्या ज़रूरत है? मेरी माँ स्वादिष्ट रसोई सीखने में माहिर है। उसी से सीख लूँगा।'' सीताराम ने कहा।

''कोई भी कितना ही स्वादिष्ट रसोई क्यों न बनाये, मुझे धर्मराज की रसोई ही पसंद है। धर्मराज से सीखने लायक़ एक और विशिष्टता

''वसुंधरा''

है। आसपास जो भी उपलब्ध होता है, उसी से वह तरह-तरह के पकवान बनाने मेंदक्ष है। पानी, आग और नमक के बिना भी वह रसोई बना सकता है। धर्मराज से जो प्रशिक्षण पाते हैं, वे समुद्र के बीच में फंस जाने पर भी, रेगिस्तान में भटक जाने पर भी, उन्हें आहार के विषय में परेशानी का सामना करना नहीं पड़ता।'' गोवर्धन ने विश्वास -भरे स्वर में कहा।

उसकी इन बातों को सुनकर सीताराम निराश हो गया और बोला, ''महोदय, आपसे तरह-तरह के काम सीखने आया हूँ। बड़ा ही योग्य बनने के इरादे से आया हूँ। परंतु आपको ज़रूरत है, एक रसोइये की, मुझ जैसे आदमी की नहीं।''

''मैं ने तुम्हें योग्य बनाने के लिए नहीं बुलाया,'' कहते हुए गोवर्धन ने सीताराम को भेज दिया और भीम को बुलवाया।

भीम ने अपना परिचय देते हुए कहा, ''मैं शिक्षित हूँ। मुश्किल काम भी आसानी से करने की मुझमें क्षमता है। चार-पांच नगरों से अपने यहाँ काम करने के लिए धनियों ने मुझे बुलाया। पर आपकी ख्याति और आपके बडप्पन के बारे में बहुत कुछ सुन चुका हूँ। इसीलिए आपके पास काम करने की उम्मीद लेकर आया हूँ।''

तब गोवर्धन ने भीम को वही बातें दोहरायीं, जो उसने सीताराम से कही थीं। भीम ने बड़ा ही उत्साह दिखाते हुए कहा,'' मैं रसोई बनाने में कुशल हूँ। जब भी मेरी माँ अस्वस्थ रहती हैं. मैं ही रसोई बनाता हूँ। धर्मराज के यहाँ रहकर रसोई बनाने के गुर सीख जाऊँगा तो अपने को बेहतर रसोइया साबित कर सकूँगा।''

गोवर्धन ने असंतोष व्यक्त करते हुए कहा, ''देखो, धर्मराज उन्हीं को प्रशिक्षण देता है, जो रसोई बनाना बिल्कुल नहीं जानते। वह तुम्हें रसोई बनाना कतई नहीं सिखायेगा।''

भीम ने तुरंत कहा, ''साहब, मैं उसे नहीं बताऊँगा कि मुझे रसोई बनाना आता है। तब वह अवश्य ही मुझे पाकशास्त्र कला सिखायेगा।''

''असली बात तुम्हारी समझ में नहीं आयी। जिनका प्रवेश रसोई बनाने में थोड़ा-बहुत है, वे धर्मराज के पाक शास्त्र का कौशल सीख ही नहीं पायेंगे।'' गोवर्धन ने कहा।

भीम ने दीन स्वर में कहा, ''महाशय, अपने को समर्थ दिखाने के उद्देश्य से मैंने झूठ कह डाला। अगर आप मुझे अपने यहाँ नौकरी देंगे तो ईमानदारी से काम करूँगा।''

गोवर्धन 'न' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''मैं पहले ही ताड़ गया कि तुम झूठ बोल रहे हो। पहले से ही अगर तुम सच बताते तो अवश्य तुम्हें नौकरी देता। अब तुम जा सकते हो।'' यह कहकर भीम को भेज दिया।

इसके बाद राजा आया और गोवर्धन से कहने लगा, ''महोदय, मैं ग़रीब हूँ। कोई काम मुझे सौंपा जाता तो मैं लापरवाही बरतता था, क्योंकि मुझे डर लगा रहता था कि श्रद्धापूर्वक काम करने पर बहुत ज़्यादा और काम मुझे सौंपे जायेंगे। इस बजह से कोई भी मुझे काम सौंपने के लिए तैयार नहीं है। अब घर चलाते हैं, मेरे बड़े भाई और मेरी भाभी। उन्होंने आत्मनिर्भर बनने की सलाह देते हुए मुझे घर से निकाल दिया। झूठ कहकर, धोखा देकर पेट भरना चाहा, पर सच्चाई मालूम हो जाने पर मैं अनेक जगहों से हटा दिया गया। आखिर लाचार होकर मैंने चोरियाँ भी कीं। जेल की सज़ा हुई। वहाँ मैंने रसोई बनाने का भी काम सीखा। मेरे बर्ताव से संतुष्ट होकर जेल के अधिकारियों ने मुझे निर्धारित समय के पहले ही रिहा कर दिया। पर बाहर आ जाने के बाद मुझे चोर ठहराते हुए कोई भी नौकरी नहीं दे रहा है। आप दयालु हैं। मौक़ा देंगे तो अवश्य ही आपका विश्वास पाऊँगा।''

सब कुछ सुनने के बाद गोवर्धन ने उससे धर्मराज के बारे में बताया और कहा, ''चूँकि पहले से ही तुम रसोई बनाना जानते हो, इसलिए धर्मराज तुम्हें रसोई बनाना नहीं सिखायेगा। झूठ कहनेवालों से मुझे चिढ़ है, इसलिए मैं तुम्हें काम पर ले नहीं सकता। तुमने चोरियाँ कीं और जेल की सज़ा भी काटी, इसलिए मैं नहीं समझता कि तुम काम पाने के योग्य हो। मैंने ठीक कहा न?।''

राजा ने जवाब में कहा, ''साहब, आप धर्मराज की रसोई के बारे में खूबी जानते हैं। हो सकता है, मैं उससे भी श्रेष्ठ रसोई बना पाऊँ। अगर आपको मेरी रसोई का स्वाद अच्छा नहीं

लगता हो तो मुझे काम पर मत लगाइये। आपने फरमाया था कि झूठ से आपको चिढ़ है। कुछ दिनों तक मुझे काम करने का मौक़ा दीजिये। इस दरम्यान एक भी झूठ मेरे मुँह से निकला तो नौकरी से निकाल दीजिये। आपसे प्रार्थना है कि बस, मुझे एक अवसर दीजिये।''

गोवर्धन ने थोड़ी देर तक सोचा-विचारा और उसे नौकरी दे दी। जब यह बात गा `वर्धन की पत्नी को मालूम हुई तो वह घबराती हुई आयी और कहने लगी, ''संपन्न घर के सीताराम को आपने नौकरी नहीं दी, सुशील भीम को नौकरी देने से आपने इनकार किया और आखिर आपने नौकरी दी, एक झूठे को, एक धोखेबाज़ को, एक चोर को। मुझे इस बात का डर है कि यह कहीं हमारा अहित न कर बैठे।''

गोवर्धन ने पत्नी को समझाते हुए कहा, ''सीताराम संपन्न है। मेरे साथ रहकर सब कुछ सीख जायेगा और फिर स्वतंत्र जीवन जीने कहीं चला जायेगा। भीम अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए झूठ कहनेवाला आदमी है। इसीलिए मैंने उसे नौकरी देने से इनकार कर दिया। अब रही राजा की बात। उसने कई अपराध किये और इसके लिए उसने सजा भी भुगती। जेल के अधिकारियों ने भी उसमें आय` परिवर्तन को देखते हुए निर्धारित समय के पहले ही उसे रिहा कर दिया। इन सबसे बड़ी बात यह है कि उसने अपने बारे में सब कुछ बता दिया। कोई भी बात नहीं छिपायी। तद्वारा उसने साबित कर दिया कि वह ईमानदार है। उसे पूरा विश्वास है कि वह मेरा प्रशंसा - पात्र बनेगा। उस विश्वास में जान फूँकना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। इसी को मानवता कहते हैं। अगर हम उसे नौकरी नहीं देंगे तो उस बदनाम राजा को कोई भी काम पर नहीं रखेगा। इसलिए वह भी हमारे ही साथ स्थिर रूप से रहने की कोशिश में लगा रहेगा।''

गोवर्धन की पत्नी ने अपने पति के निर्णय की प्रशंसा कीऔर राजा ने भी गोवर्धन के विश्वास को सच साबित किया।
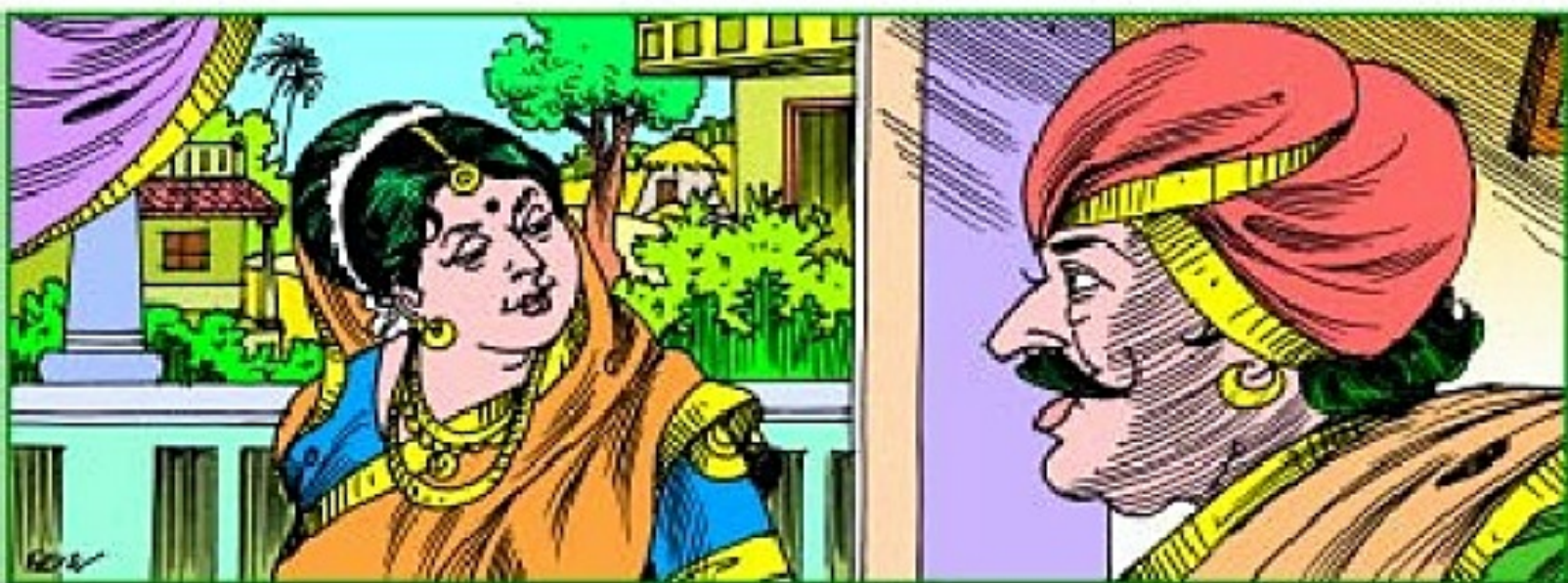
भल्लूक मांत्रिक

11

(राजा दुर्मुख जब जंगलों में भटक रहा था, तब उसके दुर्ग पर सामंत राजा ने अधिकार कर लिया। उसने यह इच्छा प्रकट की कि उसका सिर भल्लूक मांत्रिक के हाथ में जाने से पहले थोड़े क्षणों के लिए ही सही वह राजा बनना चाहता है। बधिक भल्लूक और उग्रदण्ड के पहुँचते ही दुर्ग के भीतर से घुड़ सवार और सैनिक बाहर निकल आये। इसके बाद...)

भाले उठाये चले आनेवाले घुड़सवारों तथा उनके बाजू में तलवार खींचे पैदल चलनेवाले सैनिकों को देख डाकुओं का सरदार नागमल्ल और उसके दो अनुचर कम्पित हो उठे। उनके साथ ही हाथी पर सवार दुर्मुख के दो सैनिक पल भर के लिए चकित रह गये और आपस में कानाफूसी करने लगे कि अब क्या किया जाये।

नागमल्ल संभल गया और अपने अनुचरों से बोला - ''सुनो, मैंने नहीं सोचा था कि सामंत के इतने सारे सैनिक एक साथ युद्ध के लिए तैयार हो हम पर हमला कर बैठेंगे! फिर भी हमें डरने की कोई बात नहीं है! बधिक भल्लूक और राक्षस उग्रदण्ड हमारी रक्षा के लिए तैयार हैं।''

''मल्ल साहब! क्या हाथी को पीछे घुमाऊँ?'' डाकुओं में से एक ने पूछा।

''नहीं, ऐसा करने पर हम लोग सब की नज़रों में गिर जायेंगे। मैंने जो योजना बनाई, उसका प्रयोग करके देखता हूँ, वह कहाँ तक सफल होती
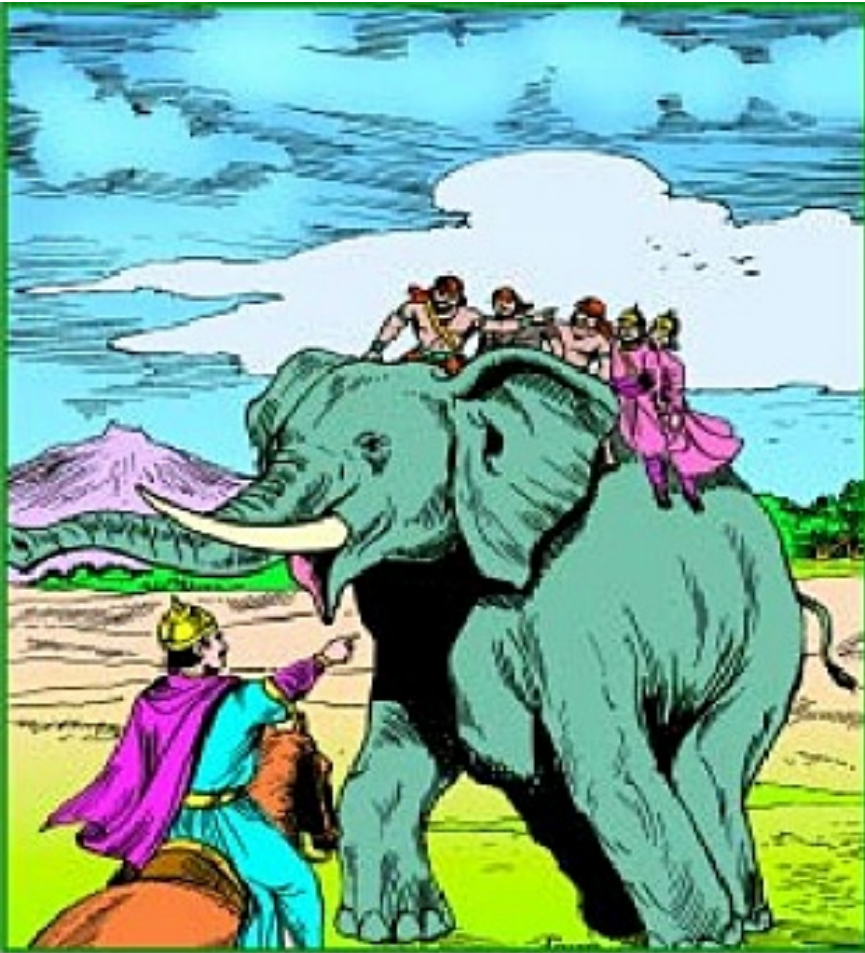
है? अगर सफल न भी हुई तो बधिक भल्लूक और राक्षस उग्रदण्ड हमारी मदद के लिए तैयार हैं ही।'' नागमल्ल ने समझाया।

''तब तो उन सैनिकों के हमारे निकट पहुँचने के पहले ही कुछ करो।''

एक डाकू ने कहा, फिर कानाफूसी करनेवाले सैनिकों से बोला, ''अबे, तुम लोग यह कानाफूसी क्या कर रहे हो? क्या यहाँ से भागकर दुश्मन के सैनिकों में मिल जाना चाहते हो? ख़बरदार! तुम लोगों की चमड़ी निकाल दूँगा।'' यों कहते उसने तलवार उठाई।

दूसरे ही क्षण नागमल्ल ने हाथी पर सवार दो सैनिकों की ओर क्रुद्ध दृष्टि दौड़ाई, फिर झट से अपनी पगड़ी खोल हवा में फड़फड़ाते हुए अपनी ओर बढ़नेवाले सामंत के सैनिकों से कहा, ''तुम लोग अपनी अपनी जगह रुक जाओ! तुम्हारे राजा कहाँ हैं? मैं तुम्हारा मित्र बनकर आ रहा हूँ! हम लोग पुराने राजा दुर्मुख को प्राणों के साथ बन्दी बनाकर ले आये हैं। अगर हमें कोई बढ़िया पुरस्कार दो तो राजा को सौंपकर हम लौट जायेंगे।''

ये बातें सुन उनके निकट आनेवाले घुड़सवार और सैनिक भी रुक गये। घुड़सवारों का सरदार थोड़ा आगे बढ़कर बोला, ''इसमें कोई दगा तो नहीं है न? तुम लोगों को जंगल पार करके इस ओर बढ़ते हुए हमारे राजा और मंत्री क़िले की दीवार पर से देख रहे हैं?''

''अगर हम धोखा देना चाहते, तो दिन दहाड़े मुट्ठी भर लोग तुम्हारे दुर्ग की ओर चले आते? पुराने राजा दुर्मुख का जीवित रहना तुम्हारे आज के राजा के लिए ख़तरनाक ही है। इसलिए अगर तुम्हारे राजा हमें उचित पुरस्कार देकर राजा दुर्मुख को नहीं ख़रीदेंगे तो हम फिर से जंगल में लौट जायेंगे।'' नागमल्ल ने उत्तर दिया।

ये बातें सुन घुड़सवारों का नेता सोच में पड़ गया कि क्या किया जाये? फिर दो पल तक सर खुजला कर इस निर्णय पर पहुँचा कि पीछे हटना वीरों का लक्षण नहीं है। वह गरज उठा, मूँछों पर ताव देते हुए तलवार उठाये बोला- ''तुम कौन हो? तुमने अपना परिचय तक नहीं दिया?''

नागमल्ल ने सोचा कि यह कोई मंद बुद्धिवाला मालूम होता है। उसने जोश में आकर पगड़ी कसकर बांध ली, तब कहा, ''मेरा नाम नागमल्ल है, मगर सब कोई मुझे सरदार नागमल्ल पुकारते हैं। मेरा पेशा है, जंगल में दिखाई देनेवाले क़ीमती

जानवरों और मनुष्यों को पकड़कर योग्य आदमियों के हाथ बेचना! समझे!''

''यों साफ़-साफ़ क्यों नहीं बताते? ये बातें मैं अपने राजा को सुना देता हूँ।'' यों उत्तर दे घुड़सवार दल का नेता अपने घोड़े को मोड़ने को हुआ, फिर रुककर पूछा, ''अच्छा, यह बताओ कि तुम्हारे पीछे दूर पर जो भीड़ है, उसमें राक्षस जैसा एक व्यक्ति है और परशु हाथ में लिये हुए एक भालू है, क्या वे सचमुच राक्षस और भालू हैं? या बहुरूपिया हैं?''

''यह बात जाननी है तो तुम्हारे राजा को खुद यहाँ पर आना उचित होगा! मैं उनके हाथ से पुरस्कार लेकर पुराने राजा दुर्मुख को उनके हाथ सौंप दूँगा और राक्षस तथा भालू वेषधारियों से उनका परिचय करा दूँगा।'' नागमल्ल ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

घुड़सवार दल के नेता ने सन्तुष्ट होकर सर हिलाया, तब तलवार उठाकर सैनिकों से कहा, ''अबे, सुनो! तुम लोगों ने अगर अपनी जगह से एक भी क़दम आगे या पीछे हटाया, तो तुम्हारे सिर धड़ से अलग हो जायेंगे। हमारे मंत्री साहब की कल्पना के अनुसार ये लोग बहुरूपिये हैं! मैं अभी जाकर अपने राजा को यह समाचार दे आता हूँ।'' यों समझा कर दुर्ग के खुले द्वार की ओर उसने अपने घोड़े को दौड़ाया।

उधर दुर्ग के बुर्ज के बाजू में खड़े हो सामंत राजा और उसके मंत्री यह सारा तमाशा देख रहे थे। घुड़सवार दल के सरदार को अपने समीप

आते ही बोले, ''सुनो, तुम दुश्मन पर हमला न करके उनके साथ मंत्रणा क्यों कर रहे थे?''

घुड़सवार दल के सरदार ने उन्हें सारा वृत्तांत सुनाकर कहा, ''महाराज! वे लोग बताते हैं कि यदि हम उन्हें छोटा-मोटा पुरस्कार दें तो वे लोग हमें राजा दुर्मुख को सौंपकर लौट जायेंगे।''

राजा दुर्मुख का नाम सुनते ही सामंत राजा चौंक पड़ा और बोला, ''क्या राजा दुर्मुख अभी तक ज़िंदा है? तो इसका मतलब है कि हमारे भेदियों ने जो ख़बर दी कि दुर्मुख किसी खूंख्वार जानवर का आहार बन गया है, वह झूठ है? महामंत्री! तुम इसी वक़्त उन भेदियों के सर कटवाने का आदेश दे दो।''

मंत्री ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा, ''महाराज! वे दोनों भेदिये इस वक़्त क़िले में नहीं हैं। उन्हें मैंने फिर से जंगल में भेज दिया है! एक

के भीतर ले आओ। पुरस्कार की बात हम फिर सोच लेंगे।''

''महाराज! अगर वह सच्चा राक्षस हो तो हमारे लिए ख़तरा होगा न!'' घुड़सवार दल के सरदार ने भर्राई हुई आवाज़ में जवाब दिया।

इस पर सूर्यभूपति ने जोर से दांत भींचकर कहा, ''तुम्हारे साथ जो फ़ौज है, उसकी मदद से तुम एक राक्षस क्या, सौ राक्षसों को भी बन्दी बना सकते हो! चलो, मैं ही खुद चलता हूँ! मेरा युद्धवाला घोड़ा कहाँ पर है?'' यों कहते वह बुर्ज पर से जल्दी-जल्दी नीचे उतर पड़ा।

एक सैनिक घोड़ा ले आया, तब सूर्यभूपति उछलकर उसकी पीठ पर बैठ गया। मंत्री भी समीप के एक और घोड़े पर सवार हो गया। आगे-आगे सामंत राजा और बाजुओं में मंत्री तथा सेनापति घोड़ों पर चलते दुर्ग के द्वार को पार कर मैदान में पहुँचे।

बात और है, महाराज! गंभीरता पूर्वक विचार करने पर ऐसा लगता है, कि वह राक्षस और भालू वेषधारी बहुरूपिये नहीं हैं। मेरा संदेह है कि वे दोनों सच्चे हैं ! शंका की बात यह हो सकती है कि ये लोग जिस दुर्मुख राजा को बन्दी बनाकर ले आये हैं, वह शायद असली राजा न हो।''

मंत्री के मुँह से ये बातें सुन सामंत क्रोध के मारे आपाद मस्तक कांप उठा और बोला, ''यह मेरी भूल थी कि मैंने तुम्हें सलाहकार के पद से मंत्री के पद पर नियुक्त किया। किसी महाराजा को सलाह देने की सामर्थ्य तुम में नहीं है।'' फिर घुड़सवार दल के सरदार की ओर मुड़कर बोला, ''हे महासेनापति! मुट्ठी भर उन कमबख़्त लोगों के साथ हम समझौता क्यों करें? तुम उन्हें चेतावनी दो कि चुपचाप वे हमारी अधीनता को स्वीकार कर लें; वरना उन्हें बन्दी बनाकर उन्हें खींच क़िले

उन्हें आगे बढ़ते देख डाकू नागमल्ल उत्साह में आकर बोला, ''ओह! मेरी योजना सफल हो गई है। सामंत राजा, मंत्री और सेनापति हमारे जाल में फंसने जा रहे हैं।''

सामंत राजा सूर्यभूपति नागमल्ल के हाथी के समीप पहुँचकर बोला, ''अरे, अपने महा सेनापति के मुँह से तुम्हारी सारी बातें मैंने सुन ली हैं। तुम मेरे राज्य में, मेरे क़िले के आगे पहुँचकर मेरे साथ सौदा करना चाहते हो? तुम इसी वक़्त जाकर हाथियों पर सवार दुर्मुख के साथ उन बहुरूपियों को भी बुला लाओ। क़िले में जाने के बाद तुम्हें

तथा उस राक्षस और भालू के वेषधारियों को उचित पुरस्कार दे दूँगा। लेकिन यह निर्णय मैं बाद में लूँगा कि दुर्मुख का सिर क़िले की चोटी पर लटकवा देना है या क़िले के द्वार पर?''

सामंत राजा के मुँह से ये बातें सुनने पर डाकू नागमल्ल को लगा कि उसकी योजना सफल नहीं हो सकती। वैसे वह राजा दुर्मुख और सूर्यभूपति के प्रति कोई विशेष ईर्ष्या या आदर का भाव नहीं रखता था। लेकिन सूर्यभूपति घमण्ड में आकर राक्षस उग्रदण्ड या बधिक भल्लूक का अपमान कर बैठेगा तो खून-खराबी होगी। जो नागमल्ल को पसंद न था।

नागमल्ल सोच ही रहा था कि इसका क्या जवाब दे, तभी हाथी पर सवार दुर्मुख के दो सैनिक झट से तलवार खींचकर चिल्ला उठे- ''महाराजा दुर्मुख की जय! हे सूर्यभूपति! तुम्हारी मौत निश्चित है! महाराजा दुर्मुख की मदद करने आये हुए लोगों में एक सच्चा राक्षस है और दूसरे मंत्र-शक्तियाँ रखनेवाले बधिक भल्लूक हैं।''

दुर्मुख राजा की जयकार सुनते ही क्रोध में पागल हो सामंत सूर्यभूपति बाज़ू में खड़े मंत्री तथा सेनापति से बोला, ''सुनो! इन घमण्डियों तथा उनके पीछे खड़े हो तमाशा देखनेवाले बहुरूपियों को मेरी ताक़त का मजा चखाना होगा।तुम लोग तुरंत कुछ घुड़ सवारों और पैदल सिपाहियों को लेकर उन्हें जंगल में भागने से रोकने का आदेश दो।'' फिर तलवार खींचकर नागमल्ल के हाथी की ओर अपने घोड़े को दौड़ाया।
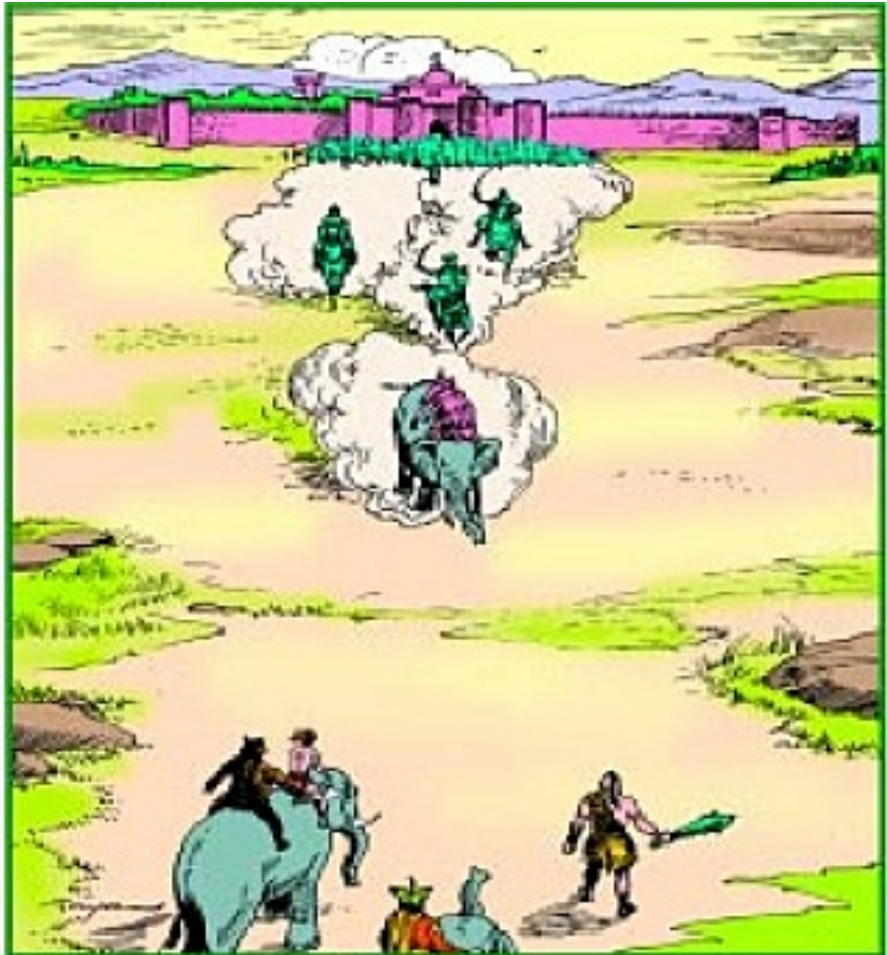
ख़तरे को भांपकर नागमल्ल ने झट से अपने हाथी को पीछे घुमाया, तथा उग्रदण्ड और बधिक भल्लूक के समीप ले जाकर वह चिल्ला उठा - ''बधिक भल्लूक प्रभु ! मेरी योजना असफल हो गई। सामंत राजा अपनी सारी सेना को हम पर उकसा रहा है।''

सूर्यभूपति ने मंत्री का अपमान किया था, फिर भी अपनी राजभक्ति को साबित करने के ख़्याल से मंत्री ने अपने घोड़े को ललकारा, नागमल्ल के हाथी के पीछे दौड़ाते चिल्ला उठा - ''अरे देशद्रोहियो! हमारे महाराजा सूर्यभूपति तुम सबों के सिर काटकर ही रहेंगे।''

इस बीच सेनापति ने दूर खड़ी सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया। तब तक आगे-आगे मंत्री तथा उसके पीछे सामंत सूर्यभूपति उग्रदण्ड और बधिक भल्लूक के समीप आ पहुँचे।

अपने दुर्ग पर अधिकार करनेवाले सूर्यभूपति को देखते ही राजा दुर्मुख क्रोध से भर उठा, तलवार खींचकर हाथी पर खड़े खड़े ही ललकारा, ''अरे सामंत सूर्यभूपति, मुझे पराये देशों पर आक्रमण करने गये देख तुम मेरे ही क़िले पर अधिकार कर बैठे ! मैं अभी तुम्हारा फिर काटने जा रहा हूँ!'' यों कहते अपने सैनिकों के मना करने पर भी सामंत के घोड़े पर कूदने को हुआ, पर इस कोशिश में जमीन पर औंधे मुँह गिर पड़ा पर दूसरे ही क्षण झट उठ खड़ा हो गया।

इसे देख बधिक भल्लूक ने जोर से तालियाँ बजाकर कहा, ''वाह! राजा की यह कैसी हिम्मत है! जंगल में चीते का सामना करने की हिम्मत न रखनेवाला राजा दुर्मुख अब अपने क़िले को देखते ही सिंहासन की याद करके दुश्मन पर उछल-कूद कर रहा है।''
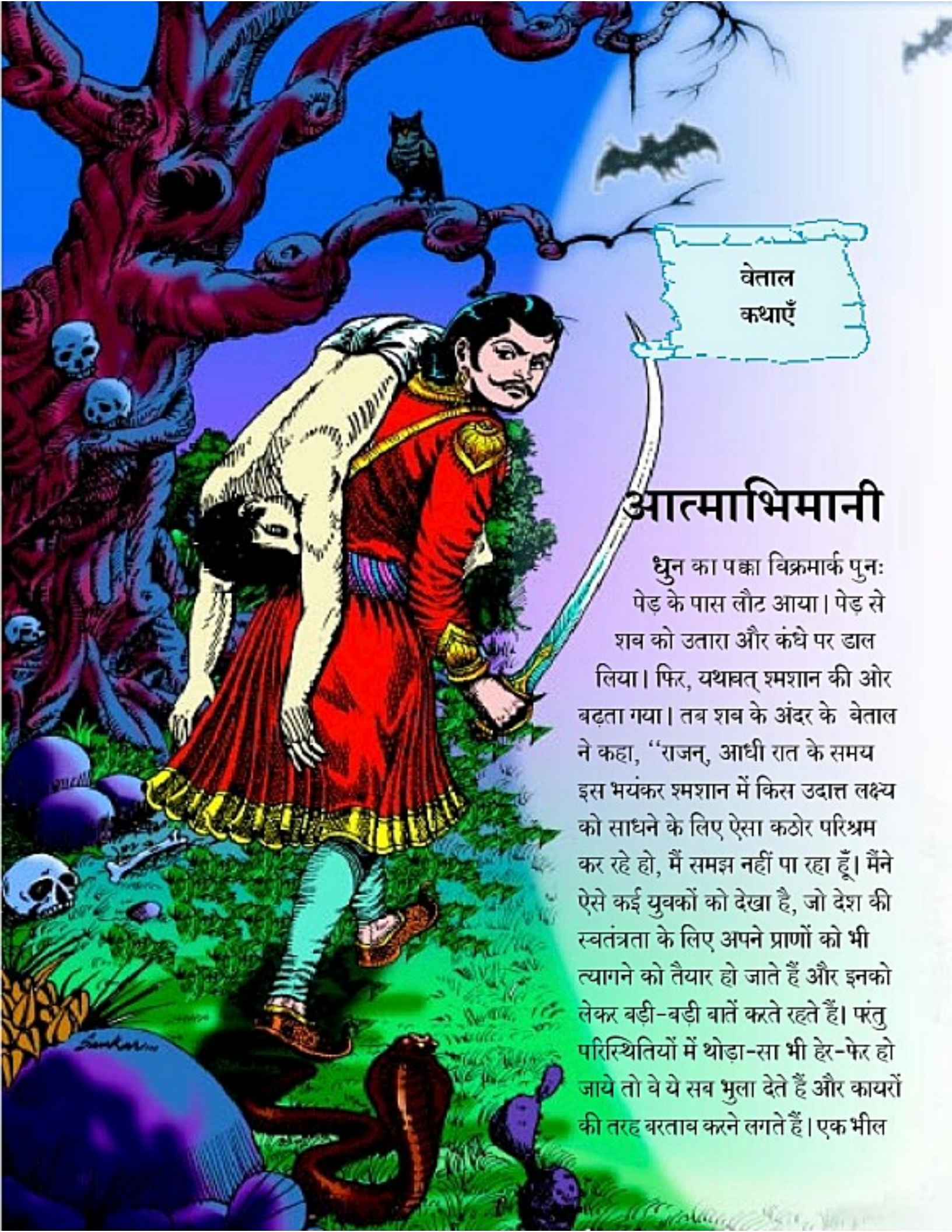
राजा को गिरते देख सूर्यभूपति खुशी से भर उठा और बोला- ''हाँ, कहा जाता है कि दुश्मन को ज़िदा रखना खतरे से खाली नही है ।'' यों कहते तलवार खींचकर सामंत ने दुर्मुख की ओर अपने घोड़े को दौड़ाया।

उसी बक़्त हाथी पर आगे बैठे जंगली युबक ने तीर का निशाना लगाकर सामंत पर छोड़ दिया। बाण का निशाना चूक गया और सामंत के घोड़े के माथे पर जा चुभा । घोड़ा जोर से हिन हिनाते अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। सूर्यभूपति नीचे गिरने को हुआ मगर लगाम खींचकर ख़तरे से बच गया । इस बीच दुर्मुख ने अपने मुक्के से मंत्री को घोड़े पर से नीचे गिरा कर उसके घोड़े पर सवार हो सामंत की ओर दौड़ाया ।

सामंत ने भांप लिया कि वह दुश्मन के बीच फंस गया है, इसलिए घबराकर अपने घोड़े को क़िले की ओर दौड़ाते हुए सैनिकों को चेतावनी देने लगा । राजा दुर्मुख घोड़े को ललकारकर तलवार उठाये गरज उठा-''अरे सामंत भूपति! कायर! रुक जाओ! हिम्मत हो तो मेरे साथ लड़ो ।'' यों कहते वह सामंत का पीछा करने लगा ।

(और है)

आत्माभिमानी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव को उतारा और कंधे पर डाल लिया। फिर, यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, आधी रात के समय इस भयंकर श्मशान में किस उदात्त लक्ष्य को साधने के लिए ऐसा कठोर परिश्रम कर रहे हो, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। मैंने ऐसे कई युवकों को देखा है, जो देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को भी त्यागने को तैयार हो जाते हैं और इनको लेकर बड़ी-बड़ी बातें करते रहते हैं। परंतु परिस्थितियों में थोड़ा-सा भी हेर-फेर हो जाये तो वे ये सब भुला देते हैं और कायरों की तरह बरताव करने लगते हैं। एक भील

युवक गिरिधर इसका जीता-जागता उदाहरण है। उसकी कहानी मुझसे सुनो।'' फिर वेताल यों कहने लगा।

भार्गव घाटी के सामंत भील सरदार कोंडदेव का इकलौता पुत्र है, गिरिधर। बचपन से ही उसमें स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा हुआ है। यद्यपि वह भीर सरदार का बेटा है, पर उसमें अहंकार तिल मात्र भी नहीं है। घाटी के युवकों के साथ वह हिल-मिल जाता है और उनसे ज़ोर देकर कहता रहता है कि मनुष्य में आत्माभिमान अवश्य होना चाहिये।

हल साल भार्गवी माता की पूजा होती रहती है। उस अवसर पर खड्ग युद्ध, तीर दाजी तथा अन्य प्रतियोगिताएँ युवकों के बीच होती रहती हैं। इन प्रतियोगिताओं में जीतनेवालों का सम्मान किया जाता है। उस समय गिरिधर युवकों को उत्तेजित करते हुए कहता है कि हर एक बहादुर को अपनी जाति की बिमुक्ति के लिए एक-एक भाला बनना चाहिये और इस आदर्श के लिए अपनी जान भी निछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिये। उसकी जोशीली बातों को सुनकर भील युवक उत्साह के साथ तालियाँ बजाने लगते हैं।

भार्गव घाटी के चारों ओर पर्वत हैं, पर उसकी दक्षिण दिशा से अंदर प्रवेश करने के लिए एक पतला तंग मार्ग है। उस मार्ग की दूसरी ओर कांचनपुर नामक राज्य है। कनकसेन उस राज्य का राजा है। उसके परदादाओं से लेकर भार्गव घाटी कांचनपुर का सामंत प्रांत है। उसके पहले घाटी की प्रजा स्वतंत्र थी। उनपर किसी का शासन नहीं था। गिरिधर ने अपने पिता तथा अपने कुल के बड़ों से बहुत बार पूछा कि घाटी सामंत प्रांत में कैसे परिवर्तित हो गयी। हर बार उन्होंने उससे यही कहा कि यह एक राज़ है और इस राज़ को बताने पर उसके कुल का अनिष्ट होगा। इसलिए हर एक ने इसपर प्रकाश डालने से इनकार कर दिया।

भार्गवी माता के मंदिर के बृद्ध पुजारी के बे अंतिम दिन थे। गिरिधर उससे मिला और गिड़गिड़ाया कि बे इस राज़ को खोलें। पुजारी ने राज़ बता तो दिया किन्तु तुरन्त मर गया।

भार्गव घाटी शहद, बिविध फल बृक्षों ब तरह-तरह के जंतुओं का निलय है। औषधि की ऐसी कोई जड़ी-बूटी नहीं है, जो वहाँ नहीं मिलती

हो। कांचनपुर के राजा को जब से उस घाटी की विशिष्टताओं का पता चला, तब से उसके सैनिक भार्गब घाटी पर हमला करने लगे और भीलों को डराने, सताने लगे। जो शहद वे इकट्ठा करते, उसे जबरदस्ती ले जाने लगे। साथ ही बारहसिंगों के सींगों और जंतुओं के चर्मों को भी लूटने लगे। बेचारे भीलों की समझ में नहीं आया कि इस दुस्थिति का सामना कैसे किया जाए।

हमेशा की तरह उस साल भी भार्गबी माता का उत्सव मनाया जा रहा था। उसे देखने कुछ सैनिकों के साथ कांचनपुर का दलाधिपति भी आया। भार्गबी माता की जब पूजा हो रही थी तब अचानक मंदिर का पुजारी भूताविष्ट हो गया और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा, ''अगर इस घाटी की मेरी संतान को सकुशल रहना हो तो मेरी एक बात सुनोगे?''

भील सरदार ने कहा, ''कहो माँ, वही होगा, जो आप कहेंगी।''

''आज से हर पूर्णिमा के दिन, तीन गागर भर शहद,बारहसिंगों के इकतीस सींग, तीन टोकरियों में भरी हुई जड़ी बूटियाँ, मेरे पांवों के सामने रखो और फिर उन्हें सैनिकों के सुपुर्द कर दो। महाराज जब तक इस नियम को ढीला करके तुम लोगों को विमुक्त नहीं करते तब तक इस नियम का उल्लंघन नहीं होना चाहिये। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारा अनिष्ट निश्चित है।''

''ऐसा ही होगा माते। आपकी आज्ञा का अवश्य पालन होगा'', भील सरदार ने आश्वासन दिया। बाकी लोगों ने भी हाँ में हाँ मिलाया।
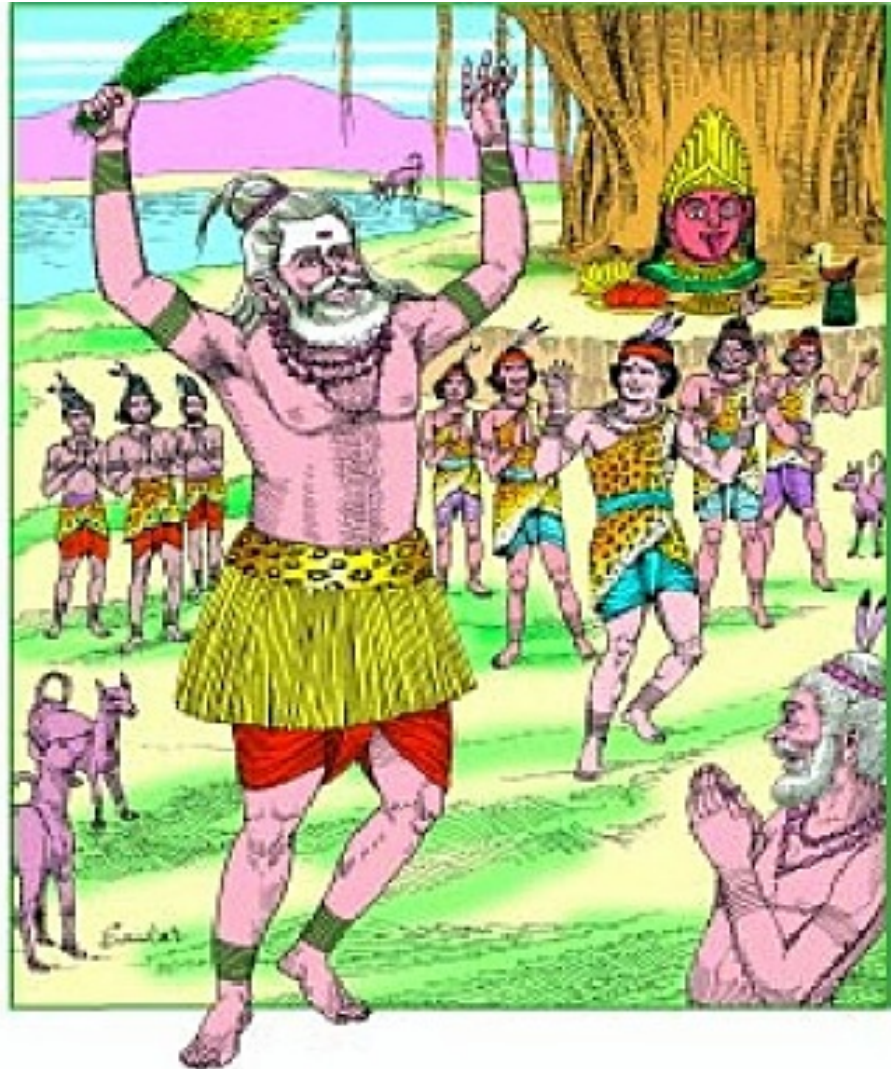
उस दिन से लेकर भार्गब घाटी कांचनपुर का सामंत प्रांत बन गयी। तब से सैनिकों ने भीलों को सताना घटा दिया, पर वे शहद, फल और जड़ी-बूटियाँ लगातार लेते जाने लगे। हर पूर्णिमा के दिन वे सैनिकों को ये वस्तुएँ सौंपते रहे।

यह रीति गिरिधर से सही नहीं गयी। उसने आवेशपूरित होकर भील युवकों से कहा, ''अरण्य माता हमें वस्तुएं प्रदान करती है। तक़लीफ़ें उठाकर हम इनका संग्रह कर रहे हैं। उन्हें सैनिकों के सुपुर्द करके, भूखे रहकर गुलामी की ज़िन्दगी हम क्योंकर काटें? हम सब एक हो जायेंगे तो सैनिक हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं?''

''ऐसा मत कहो बेटे, यह तो आग से खिलवाड़

है। राजा की सेना की ताक़त के सामने हम हैं क्या?'' पिता ने बेटे को समझाया।

गिरिधर ने एक दिन अपने पिता से कहा, ''मैं खुद राजा से मिलूँगा और घाटी की तक़लीफ़ें उन्हें बताऊँगा।''

''राजा ने हमारी प्रार्थना सुन ली तो कोई समस्या ही नहीं। विनयपूर्वक बिनती करके देखो।'' पिता ने सलाह दी।

दूसरे ही दिन, गिरिधर अपने दो दोस्तों को लेकर राजधानी पहुँचा और राजा से मिलकर जनता के कष्टों की जानकारी दी।

सब कुछ सुनने के बाद महाराज ने कहा, ''भार्गव घाटी हमारा सामंत प्रांत है। उसपर सभी अधिकार हमारे हैं। अगर कर चुकाना नहीं चाहते हो तो घाटी छोड़कर चले जाओ।''

''भार्गव घाटी हमें जन्म देनेवाली माँ है। प्रभु, उसे छोड़कर जाना संभव नहीं है। यह तो हम सपने में भी सोच नहीं सकते। क्षमा कीजिये,'' कहता हुआ वह दरबार से बाहर आ गया।

एक हफ़्ता गुज़र गया। एक दिन राजा जब दरबार में सिंहासन पर आसीन था, तब एक भील युवक दरबार में आया और राजा को नमस्कार करके उसने एक पत्र उसे दिया। राजा पत्र पढ़ने लगा, जिसमें लिखा हुआ था, ''राजन्, तीन पीढ़ियों के पहले भूताविष्ट पुजारी की धमकी से डरकर हमारी घाटी के निवासियों ने वचन दिया था और वे उसका पालन करते हुए आ रहे हैं। तब से लेकर हम आपको कर चुकाते आ रहे हैं और तक़लीफें सहते आ रहे हैं। खुद मैंने आपसे बिनती की पर आपने मेरी बिनती ठुकरा दी। यह सचमुच हमारा दुर्भाग्य है। अब हम सबने अपने को स्वतंत्र घोषित करने का निर्णय कर लिया है। हमारे लोग आपकी सेना का सामना करने और मर-मिटने के लिए तैयार हैं। पर मैं रक्तपात के पक्ष में नहीं हूँ। अतः मेरा एक प्रस्ताव है। भील युवकों का प्रतिनिधि बनकर आपके बहादुरों में से किसीसे भी द्वंद्व युद्ध करने के लिए मैं तैयार हूँ। खड्ग-युद्ध में अगर मैं जीत गया तो हमारी घाटी को स्वतंत्र घोषित कर दीजिये। अगर मेरी हार हुई तो दूसरे ही क्षण हम घाटी छोड़कर चले जाने के लिए तैयार हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि महाराज मेरी बिनती को स्वीकार करेंगे। कृपया सूचित कीजिये कि प्रतियोगिता कहाँ होगी और समय

क्या होगा? आपकी सूचना की प्रतीक्षा में भार्गव घाटी का गिरिधर।''

पत्र को पढ़कर राजा की भौंहें चढ़ गयीं। अपने क्रोध को नियंत्रित करते हुए राजा ने भील युवक से कहा, ''ठीक है, अगली पूर्णिमा के सायंकाल राजधानी के मैदान में यह प्रतियोगिता होगी और इसकी सूचना गिरिधर को दे देना।''

राजा की आज्ञा के अनुसार पूर्णिमा के दिन प्रतियोगिता के लिए सभी आवश्यक प्रबंधकिये गये। दो मित्रों के साथ वहाँ आये गिरिधर ने जैसे ही मैदान में क़दम रखा, सैनिकों ने उसे घेर लिया और उसे क़ैद कर लिया।

इस अप्रत्याशित परिणाम पर गिरिधर स्तब्ध हो राजा को क्रोध से देखता रह गया।

राजा ने व्यंग्य-भरे स्वर में उससे कहा, ''गिरिधर, तुम्हारी बहादुरी तारीफ़ के लायक़ है। पर तुमने राज-धिक्कार करके अपनी जान विपत्ति में डाल ली। यही क्षत्रीय का धर्म है। पीढ़ियों से जो भोले-भाले लोग शांत व सुखी जीवन बिता रहे थे, उनके हृदयों में तुमने आत्माभिमान, स्वतंत्रता आदि के बीज बो दिये। उन्हें गुमराह करके, राज-विद्रोह करना चाहते हो। तुम क्षमा के योग्य नहीं हो। इसी क्षण तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा सकता हूँ, पर अनावश्यक रक्तपात के पक्ष में मैं भी नहीं हूँ। इसलिए मैंने भी तुम्हारी ही तरह एक विकल्प सोच रखा है। भार्गव घाटी की प्रजा भी मेरे विरुद्ध हो गयी है। स्वतंत्रता पाने के लिए उन्होंने कमर कस ली है। इस स्थिति में उन्हें वश में रखना कोई आसान काम नहीं है। मेरी सेना भी शायद ही उनपर विजय पा सकेगी।
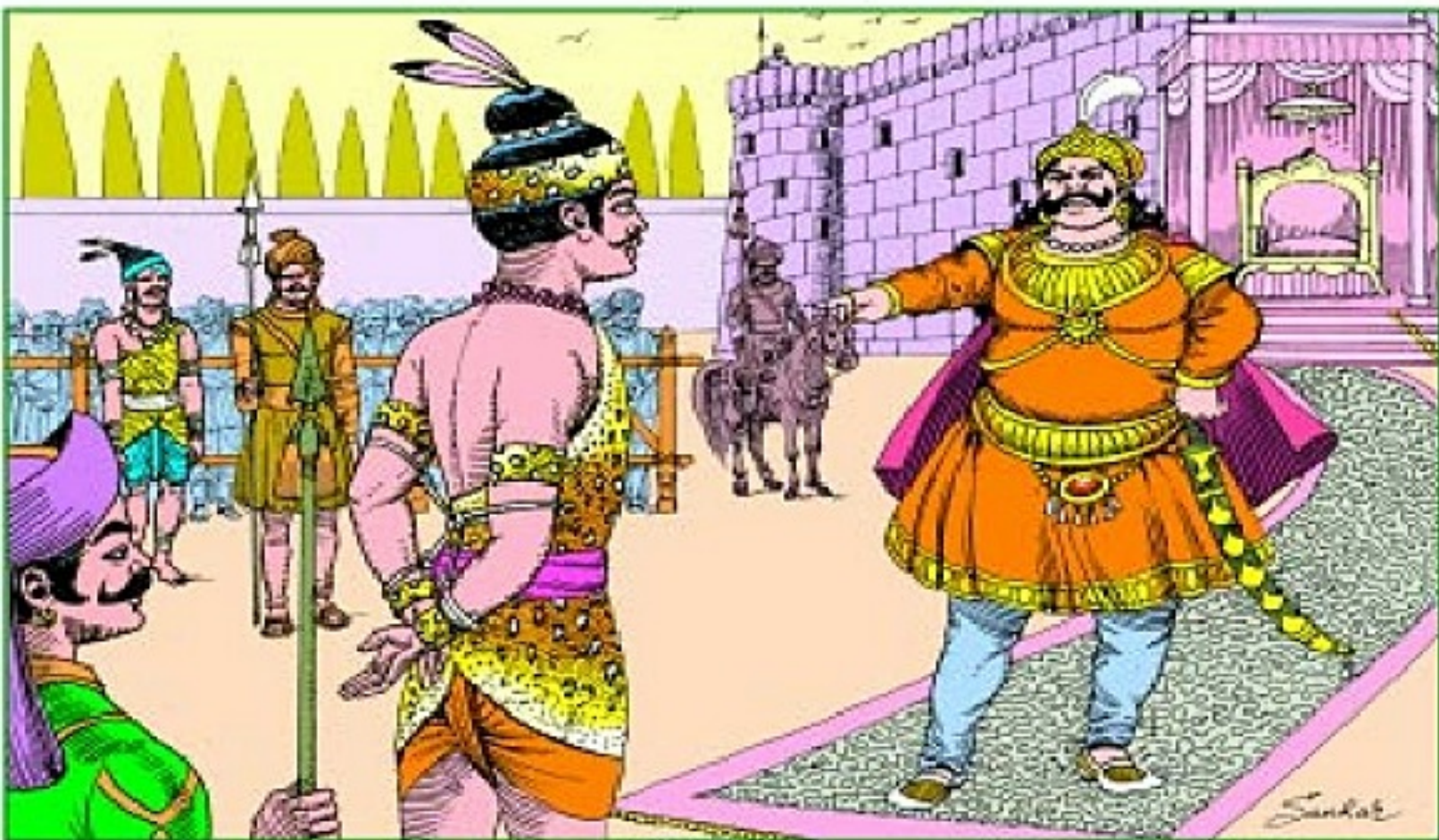
जो स्वतंत्रता वे चाहते हैं, वह मैं दूँगा, पर एक शर्त है।'' गिरिधर ने पूछा, ''कहिये, वह शर्त क्या है?''

''तुम्हारी जन्मभूमि भार्गवघाटी को स्वतंत्रता देनी हो तो तुम्हें आजीवन राजभवन में रहना होगा और गुलाम बनकर जीवन बिताना होगा। क्या तुम्हें स्वीकार है?''

पहले तो गिरिधर चौंक उठा, पर दूसरे ही क्षण उसने अपने को संभाल लिया। ''हृदयपूर्वक आपकी शर्त को स्वीकार करता हूँ'' हँसते हुए उसने कहा।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, बचपन से ही गिरिधर स्वाभिमानी है, पर आजीवन गुलाम बने रहने की शर्त उसने मान ली। क्या तुम्हें यह आत्मसमर्पण विचित्र नहीं लगता? अचानक उसमें जो परिवर्तन हुआ इसका क्या कारण है? कहीं उसमें प्राण भय उत्पन्न तो नहीं हुआ? या परिस्थितियों के सम्मुख सिर झुकाना ही उसने श्रेयस्कर समझा? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओ तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने उसकेसंदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''गिरिधर में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ था। उसके जीवन का लक्ष्य है अपनी जाति के लोगों को स्वतंत्रता दिलाना। आखिर उसने यह साधा भी। इसके लिए उसने अपनी स्वतंत्रता दांव पर रख दी। उसमें प्राण भीति लवलेश भी नहीं है। परिवार के गौरव के लिए व्यक्तिगत अभिमान को मार लेना, एक गांव के गौरव की रक्षा के लिए एक परिवार का अपमानित होना, एक देश का गौरव बनाये रखने के लिए एक पूरे गाँव की बलि देने को तैयार हो जाना उदात्त त्याग होता है। वह परिस्थितियों के सामने सर झुकाना नहीं कहलाता। अपनी जाति की विमुक्ति के लिए अपने जीवन को भी त्याग करने में न झिझकनेवाला महोन्नत आत्माभिमानी है गिरिधर। उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः सुचित्रा की रचना)

एक अच्छा शिक्षक कौन बन सकता है?

भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन का यह एक प्रसंग है।

भारत अभी-अभी आजाद हुआ था। पंचायत बोर्ड के चुनाव चल रहे थे। उसके पिता जनाब अबुल पकीर जैनुलब्दीन रामेश्वरम से चुनाव जीत गये और बाद में पंचायत के अध्यक्ष चुन लिये गये। उन्हें लोगों ने, मजहब अथवा आर्थिक स्तर के आधार पर नहीं, बल्कि विचारों की उदारता के कारण और एक अच्छे इनसान के नाते चुना था।

एक शाम को बालक अब्दुल कलाम मिट्टी के तेल के दीये के प्रकाश में पढ़ रहा था। तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और एक आगन्तुक अन्दर आया। उसने कहा कि उसे उसके पिताजी को कुछ देना है। उस समय बालक अब्दुल कलाम के माता-पिता दोनों नमाज़ पढ़ रहे थे। इसलिए उसने आगन्तुक को खाट पर पैकेट रख देने के लिए कहा। आगन्तुक ने ऐसा ही किया।

जब अब्दुल कलाम के पिता आये तब उन्होंने पैकेट देख कर पूछा, ''यह क्या है? यहाँ किसने रखा?'' ''अभी एक व्यक्ति आकर यहाँ छोड़ गया।'' बालक अब्दुल कलाम ने कहा। उसके पिता ने पैकेट खोल कर देखा। उसमें एक कीमती धोती, एक शाल, फल, कुछ मिठाइयाँ और एक स्लिप थी। उन्होंने कुछ और नहीं पूछा; वे क्रोधित हो गये और अपने बेटे को पीटने लगे। उसकी माँ ने आकर बच्चे को छुड़ाया। इसमें आखिर बच्चे की क्या गलती थी! तब पिता ने इस्लाम का उद्धरण देते हुए कहा, जब अल्लाह किसी को कोई ओहदा देता है तब वह उसकी जरूरतों का भी ख्याल रखता है। यदि वह उससे ज्यादा लेता है तब वह गैरकानूनी हो जाता है। उसने अपने बेटे से कहा, ''हर तोहफे के पीछे कुछ छिपा हुआ इरादा होता है। इसलिए तोहफा लेना पाप है।''

अब्दुल कलाम के मन में अपने पिता के प्रति उनके क्रोधपूर्ण व्यवहार के लिए कोई वैर-भाव नहीं आया, बल्कि उसने एक महत्वपूर्ण शिक्षा ग्रहण कर ली। यह बात उसके मन की गहराई में बैठ गई।

एक दूसरी घटना ने लगभग उसके जीवन की दिशा बदल दी। तब वह आठवीं कक्षा का छात्र था। उसके स्कूल में शिव सुब्रमनिया आयर नाम

के एक अध्यापक थे जिसके बारे में अब्दुल कलाम कहते थे कि वे उनके स्कूल में श्रेष्ठ अध्यापकों में से एक थे। एक दिन वे कक्षा में पढ़ा रहे थे कि चिड़िया कैसे उड़ती है। उन्होंने ब्लैक बोर्ड पर एक चिड़िया का चित्र बनाया जिसमें उसके पंख, पूँछ, सिर तथा उसके शरीर की पूरी संरचना थी। उन्होंने समझाया कैसे चिड़िया पहले ऊपर उठने की क्रिया का सर्जन करती है और फिर उड़ती है और कैसे वह उड़ते समय अपनी दिशा बदलती है तथा यह भी कि समूह में उड़ते समय वे कैसे संगठन बनाती हैं।

बच्चों ने बड़े ध्यान से सुना। पढ़ाने के बाद अध्यापक ने बच्चों से पूछा कि क्या वे समझ गये कि चिड़ियाँ कैसे उड़ती हैं।

कक्षा में कुछ समय के लिए शान्ति छायी रही। तब बालक अब्दुल कलाम उठा और बोला, कि वह नहीं समझ सका। तब अध्यापक ने दूसरों से पूछा। सबने स्वीकार किया कि वे कुछ नहीं समझ सके। अध्यापक बिलकुल अशान्त न हुए। बल्कि उन्होंने यह कहा कि शाम को वे सब को समुद्र तट पर ले जायेंगे। समुद्र तट पर उन्होंने दिखाया कि समुद्री पक्षी कैसे संगठनों में उड़ते हैं। वे चकित रह गये। उन्होंने तब बच्चों को ध्यान से यह देखने के लिए कहा कि पक्षी कैसे अपने पंखों को फड़फड़ाते हैं और दिशा बदलने के लिए कैसे अपनी पूंछ को घुमाते हैं। उन्होंने बताया कि उड़ान में शक्ति भरने के लिए इंजिन पक्षी के भीतर होता है जो केवल उड़ने की प्रेरणा चाहता है। घर लौटते-लौटते बच्चों ने उड़ान के गतिविज्ञान का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया था। यह व्यावहारिक पाठ था। कक्षा के अन्दर जिसे आधे घण्टे में समझाया नहीं जा सका, समुद्र तट पर उसे १५ मिनट में समझा दिया गया।

अब्दुल कलाम कहते हैं कि शिव सुब्रमनिया आयर एक समर्पित अध्यापक थे।

घर लौटने पर अब्दुल कलाम ने लगभग निश्चय कर लिया कि अवसर मिलने पर वह उड़ान का तथा उड़ान प्रणाली का अध्ययन करेगा। लगता है उसने भावी जीवन का निर्णय भी ले लिया था। इसमें आश्चर्य नहीं कि कुछ वर्षों के बाद जब उन्होंने मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी में दाखिला लिया तब अध्ययन का मुख्य विषय वैमानिक इंजीनियरिंग ही चुना। यह इनके जीवन का सन्धि काल था यद्यपि ये उस समय सिर्फ १३ वर्ष के थे।

हमलोग ''तेजी से आगे'' बढ़ें। डॉ.अब्दुल कलाम बंगलोर में डिफेन्स रिसर्च डेवलप्मेंट ऑर्गनाइजेशन (डी.आर.डी ओ.) में वैमानिक विकास विभाग में काम कर रहे थे। यह सन् १९५८

का साल था। डॉ.कलाम होवर क्राफ्ट पर काम कर रहे थे जिसमें डक्टेड कॉन्ट्रा रोटेटिंग प्रोपेलर्स की आवश्यकता थी। उन्हें परम्परागत प्रोपेलर्स का डिज़ाइन बनाना आता था, लेकिन होवर क्राफ्ट में जैसे प्रोपेलर्स की आवश्यकता है, उसका डिज़ाइन वे नहीं जानते थे। उन्हें सलाह दी गई कि वे इन्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस के प्रोफेसर सतीश धवन से मिलें, जो वैमानिक शोध के लिए विख्यात थे।

अपने वरिष्ठ अधिकारी की स्वीकृति से डॉ.कलाम ने प्रो.धवन से मिल कर उन्हें अपनी समस्या बताई। उन्होंने डॉ.कलाम को कहा यदि वे छः सप्ताह तक प्रत्येक शनिवार को उनके कक्षा में उपस्थित रहें तो वे प्रोपेलर डिज़ाइन को बनाने का तरीका सिखायेंगे। प्रो.धवन ने पूरे पाठ्यक्रम के लिए समय-सारिणी बनाई, उन्हें सन्दर्भ-सामग्री दी तथा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने से पूर्व पढ़ने के लिए पुस्तकें भी दीं। क्लास आरम्भ करने से पहले प्रो.धवन डॉ. अब्दुल कलाम से यह देखने के लिए आलोचनात्मक प्रश्न पूछते कि उन्होंने कितना समझा है। डॉ.अब्दुल कलाम कहते हैं कि सिर्फ़ अच्छे अध्यापक ही ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यार्थी को तैयार करने में इतनी सावधानी से योजना बनाने का कष्ट उठाते हैं। छः सप्ताहों के पश्चात डॉ.कलाम कॉन्ट्रा-रोटेटिंग प्रोपेलर्स के बारे में सब कुछ जान गये। सौभाग्यवश उन्हें कक्ष में रोहिणी रॉकेट को छोड़ने के लिए भारत के सटेलाइट लॉंच वेहिकिल (एस.एल.वी.) को विकसित करने की योजना पर प्रो. धवन के साथ काम करने का अवसर मिल गया जो इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गनाइजेशन (इसरो) के अध्यक्ष बन गये थे। डॉ. कलाम को लगा मानों उनका सपना साकार हो गया हो।

डॉ.कलाम अपने संस्मरण में बताते हैं कि कैसे उन्होंने अपने पिता से नैतिक मूल्यों की शिक्षा पाई, हालांकि यह सख्ती से मिली; कैसे शिव सुब्रमनिया आयर जैसे अध्यापक छात्रों के लिए आसानी से आदर्श बन सकते हैं; तथा कैसे शिक्षा में व्यावसायिकता के स्पर्श से विश्वास और संकल्प शक्ति का निर्माण होता है। हरेक के जीवन में अध्यापक दीपक होते हैं जो बदले में अन्य अनेक दीपों को प्रज्वलित करता है।

(शिक्षक दिवस, २००३ के दिन आकाश वाणी के प्रसारण पर आधारित)

ताज महल अब ३५० वर्ष का

विश्व के सात आश्चर्यों में से एक आगरे का ताजमहल ३५० वर्ष पूर्व सम्राट शाहजहाँ द्वारा निर्मित किया गया था। इसकी ऊँचाई २४४ फुट है, लेकिन इसकी संरचना इतनी आनुपातिक है कि कोई इतनी ऊँचाई की कल्पना नहीं कर सकता। प्रसंगवश दिल्ली की कुतुबमीनार, जो विश्व की सबसे ऊँची मीनार है और जो ताज से ४०० वर्ष पूर्व निर्मित की गई थी, चार फुट कम ऊँची है! ताज के चारों ओर दीवारों पर समान आकार में खुदी पवित्र कुरान शरीफ़ की आयतें अरबी लिपि में हैं। मुमताज महल की समाधि के चारों ओर का परदा सबसे पहले सोने का बनाया गया था। तोड़-फोड़ के भय से सम्राट ने इसके स्थान पर संगमरमर का आवरण-पट बना दिया था। उसके बेटे औरंगजेब ने सैनिक तैयारियों के मद पर खर्च के लिए उसे बेच दिया था। समाधि पर आजकल पत्तियों की बारीक पैटर्न से बना बहुत सादा परदा लगा हुआ है।

एक विश्व कीर्तिमान!

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आयोजित डांडी मार्च भारतीय स्वाधीनता संग्राम की एक प्रमुख युगान्तरकारी घटना है। क्या आप जानते थे कि यह एक विश्व-कीर्तिमान भी है? यह २५ दिनों तक जारी रहने वाला विश्व का सबसे बड़ा सविनय अवज्ञा आन्दोलन माना जाता है। गाँधी जी तथा उनके ७८ अनुयायियों ने सन् १९३० में १२ मार्च से ५ अप्रैल तक साबरमती तथा डांडी के बीच ३८८ कि.मी. की दूरी पैदल तय की थी।

अमर पांडे का ज्योतिष

सनतपुर नामक गाँव में अमरपांडे नामक एक सुप्रसिद्ध ज्योतिषी रहा करता था। उसके पास जो लोग आते थे, वह उनकी जन्म कुंडलियाँ देखता था और उनका भविष्य बताता था। जिनकी जन्म कुंडली नहीं होती थी, उनके जन्म नक्षत्र के आधार पर जन्म कुंडली चक्र बनाता था और उनका भविष्य बताता था। ग्रह शांति के नाम पर वह शांति पूजा-हवन करवाता और उनसे तगड़ी रक़म वसूल करता था।

अमरपांडे का भाग्य कहिये या संयोग, उसका ज्योतिष अधिकतर सही निकलता था। अगर कभी उसका ज्योतिष सही नहीं निकला और जमकर उसका विरोध किया गया तो वह मीठी बातें करके उन्हें शांत कर देता था।

भास्कर पांडे, अमर पांडे के दूर का रिश्तेदार था। एक बार उनकी मुलाक़ात अचानक बाजार में हुई। भास्कर पांडे ने अमर पांडे से कडुवे स्वर में कह डाला, ''मैंने सोचा कि तुम ज्योतिष शास्त्र में महापंडित हो। पिछली बार मैं जब तुम्हारे पास आया तब तुमने कहा था कि छः महीनों में तुम्हारी बेटी का विवाह संपन्न होगा। पूरा साल गुज़र गया, पर अब तक कोई भी रिश्ता पक्का नहीं हुआ। रिश्तेदार होते हुए भी तुमने मुझसे बड़ी रक़म ऐंठी। सच कहा जाए तो तुम ज्योतिषी हो ही नहीं।''

इसपर अमर पांडे आग-बबूला होता हुआ बोला, ''जबान संभालकर बात करना। तुमने मुझे समझ क्या रखा? काशी के महापंडितों का शिष्य हूँ। तुमने जो जन्म कुंडली मुझे दिखायी, उसी में त्रुटियाँ होंगीं।''

भास्कर पांडे ने इसके जवाब में तुरंत कहा, ''तुम्हें क्या यह भी याद नहीं कि तुम्हीं ने मेरी बेटी की जन्म कुंडली बनायी?''

थोड़े क्षणों तक चुप रहने के बाद अमर पांडे

कल्कि

ने कहा, "तब तो तुमने अपनी पुत्री का जन्म नक्षत्र ग़लत बताया होगा। अथवा उसके जन्म का समय सही बताया नहीं होगा। जन्म के समय के विषय में एक पल भी इधर-उधर हो जाए तो ग्रहों में हेर-फेर हो जाने की संभावना है। ऐसी बारीक बातें तुम जैसे मूर्खकी समझ में नहीं आतीं। ज ा, जा," कहता हुआ वह ाँ से खिसक गया।

जो लोग अमर पांडे से ऐसे सवाल करने का साहस नहीं रखते, वे यह कहते हुए चुप रह जाते हैं– "यह सब हमारा दुर्भाग्य है। किसी को दोषी ठहराने से क्या फ़ायदा?"

ज्योतिष के नाम पर अमर पांडे जो धोखा-धड़ी कर रहा है, उसके बारे में अपने गुप्तचरों के द्वारा ज़मींदार को जानकारी मिली। पर वे सोचने लगे कि लोगों को उसकी असलियत कैसे मालूम हो, उसका परदाफाश कैसे हो?

ऐसे समय पर राजा का एक प्रतिनिधि ज़मींदारी के गांवों में घूमता हुआ सनतपुर आया और ज़मींदार से मिला। ज़मींदार ने उसे ठग अमर पांडे के बारे में बताया और कहा, "इस कपटी ज्योतिषी की वजह से मेरे गांव की जनता ही नहीं बल्कि आसपास के गांवों की जनता भी ठगी जा रही है। इसके खोखलेपन का परदाफ़ाश करना है। मेरी समझ में नहीं आता कि यह कैसे हो।"

तब राजा के प्रतिनिधि ने भली-भांति सोच-विचार करने के बाद ज़मींदार को उपाय सुझाया कि कैसे ऐसे कपटी ज्योतिषियों के कपटों का पर्दाफ़ाश हो। इसके दूसरे दिन की रात में अमर पांडे के घर में चोर घुस आये और तिजोरी में रखे हुए गहने व धन लूटकर चले गये।

सबेरे-सबेरे ही यह समाचार गांव भर में फैल गया। जहाँ देखो, लोग इसी चोरी की बात किये जा रहे हैं। जो ज्योतिषी लोगों के भूत, वर्तमान और भविष्य को बता सकता है, उसी के घर में यह चोरी हो गयी और उसे इसका पता पहले नहीं लगा, इसपर सबको आश्चर्य होने लगा। कुछ लोग तो इसपर खुश भी हुए। उनका समझना था कि जो हुआ, सही हुआ है।

अमरपांडे हर एक को अपनी दुख भरी कहानी सुनाने लगा। दूसरे ही दिन ज़मींदार ने उसे अपने यहाँ आने की खबर भिजवायी। पांडे में आशा

जाग उठी। उसने सोचा कि शायद चोर पकड़े गये हैं और उसे धन व गहने लौटाने के लिए ही ज़मींदार ने उसे बुलवाया होगा। वह दौड़ता हुआ ज़मींदार के यहाँ गया। उस समय दिवान के चबूतरे पर ज़मींदार अनेक ग्रामीणों के साथ बैठे हुए थे। वे आपस में कानाफूसी कर रहे थे।

उदास अमरपांडे को ज़मींदार ने नख से शिख तक देखा और व्यंग्य भरे स्वर में कहा, ''अमर पांडेजी, आप तो सबको शकुन बताते हैं। इस इलाके भर के लोगों का भविष्य बताते हैं। क्या आप यह भी अंदाज़ा लगा नहीं पाये कि आपके घर में चोरी होनेवाली है?''

इस सवाल से घबरा गये अमर पांडे ने कहा, ''महाशय, मुझे पहले से ही मालूम था कि कल रात को घर में चोर घुसनेवाले हैं। पर जो होना है, होकर ही रहेगा, इसलिए मैंने इसपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।''

ज़मींदार ने कड़वे स्वर में कहा, ''तुम्हारा कहा अगर सच है तो इसका यह मतलब हुआ कि तुमने दो अपराध किये। पहला, यह जानते हुए भी कि चोर चोरी करने घर में घुसनेवाले हैं, तुमने यह बात छिपायी और अप्रत्यक्ष रूप से उनके बच जाने में मदद पहुँचायी। दूसरा, जो होना है, होकर रहेगा, यह जानते हुए भी ज्योतिष के नाम पर तुमने लोगों को धोखा दिया। बड़ी मात्रा में उनसे धन ऐंठा। कहो, अब तुम्हें क्या कहना है?''

''आपने जो कहा, उसे मैं कैसे इनकार कर सकता हूँ?'' कहते हुए अमर पांडे ने सिर झुकाकर

दोनों हाथ जोड़ दिये। वहाँ उपस्थित सभी लोग ठठाकर हँस पड़े।

ज़मींदार भी मुस्कुराते हुए बोले, ''अमर पांडे, तुम्हारे ज्योतिष की बात छोड़ो, तुम तो बडे भाग्यवान हो। कल जो राजप्रतिनिधि आया था, उसने काशी में ज्योतिष शास्त्र का गहरा अध्ययन किया है। सबेरे राजधानी लौटते समय पहरेदारों को सावधान करते हुए वह यह कहकर गया कि रात को गांव के किसी घर में चोरी होनेवाली है। इस वजह से पहरेदार भी बहुत सतर्क हो गये। तुम्हारे घर से जब चोर निकले तब उन्होंने देखा कि पहरेदार उन्हें पकड़ने के लिए पहुँचने ही वाले हैं तो सारा माल वहीं फेंककर रफूचक्कर हो गये।''

''तो क्या मेरा धन और गहने सुरक्षित हैं?'' अमर पांडे ने कहा।

जमींदार ने तब ऊँचे स्वर में कहा, ''अभी अपना पूरा माल ले जाना। किन्तु आज से कभी भी यह कहने का दुस्साहस मत करना कि मैं ज्योतिषी हूँ। जो धन है, उससे कोई व्यापार करो या खेत खरीदकर खेती करो।''

''महोदय, आपकी आज्ञा को कैसे टाल सकता हूँ। आप सबकी उपस्थिति में शपथ लेकर कहता हूँ कि इस क्षण से मैं ज्योतिषी नहीं हूँ।'' अमर पांडे ने कहा।

इसके बाद ज़मींदार ने वहाँ उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा, ''भोले-भाले लोगों में अपने भविष्य को लेकर भय बना रहता है। उनमें अंध विश्वास घर कर जाते हैं। इन्हीं का फायदा उठाते हैं, अमर पांडे जैसे कपटी ज्योतिषी। जब तक हम में ऐसी कमज़ोरियाँ होती हैं, तब तक ऐसे कपटी हमें धोखा देते रहते हैं।

आज अमर पांडे सुधर गया। पर इसका यह मतलब नहीं कि कल कोई दूसरा अमर पांडे उभर नहीं आयेगा। ऐसे लोगों से हमें शाश्वत रूप से पिंड छुड़ाना हो तो हमें चाहिये कि हम ऐसे अंधविश्वासों से बाहर निकल आयें।

बच्चे अखबार की सुर्खियों में

अमरीकी लम्बी दौड़ में भारतीय विजयी

संजोस, कैलिफोर्निया के एक हाई स्कूल विद्यार्थी १५ वर्षीय गौतम पेरी ने सॅन फ्रॉसिसको क्रॉनिकल मैरेथन में १९ वर्ष से नीचे के ग्रूप में चौथा स्थान प्राप्त किया। वह १९०० से अधिक प्रतियोगियों में दूसरा अल्पतमवय का बालक था। उसने ३ घ. ४६मि.४७से. में दौड़ पूरी की। अल्पतमवय का प्रतियोगी, जो १२ वर्ष का था, गौतम से २ घं.और १३९८ स्थानों से पीछे था।

गौतम और उस का परिवार हैदराबाद से अमेरिका जाकर बस गया था। वह दौड़-प्रतियोगिताओं में भाग लेने में रुचि रखता है। पहली लम्बी दौड़ में भाग लेने के बाद अपने प्रदर्शन के बारे में अपना विचार उसने यों प्रकट किया: "मैं सन्तुष्ट था, लेकिन मेरा लक्ष्य था ३:१५ से पहले पूरा करना। जब मैं लगभग २० मील अकेला ही दौड़ रहा था तब ध्यान केन्द्रित करना कठिन था। प्राकृतिक दृश्य मुझे आकर्षित करते रहे। एक-दो सालों में मैं चाहता हूँ कि सबसे अगली टोली के साथ दौड़ूँ।"

वर्तनी का जादूगर

विद्यार्थियों के लिए ७७ वाँ राष्ट्रीय वर्तनी बी वाशिंगटन में पिछले जून को आयोजित किया गया। भारतीय मूल का, कोलारडो का आठवीं कक्षा का छात्र अक्षय बुद्धिगा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सिर्फ एक शब्द की वर्तनी करते समय उससे भूल हो गई और पहला स्थान १४ वर्षीय डेविड टिडमर को मिल गया जिसे पुरस्कार में १२ हजार अमरीकी डालरदिये गये।

सन् २००२ में आयोजित इसी प्रतियोगिता में अक्षय के बड़े भाई प्रत्युष को चैम्पियन घोषित किया गया था।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

कृष्णकुमार रास्ते में राम कुमार से मिला। "मैंने सुना है कि तुम्हारे घर में तीन दिन चोरी हुई," उसने रामकुमार से पूछा। "तुम्हारे कहने का तात्पर्य है कि तुमने चोरों को लोहे की अलमारी तोड़ते हुए सुना नहीं?"

"नहीं, उन लोगों ने अलमारी को तोड़ कर नहीं खोला," रामकुमार ने उत्तर दिया। "उन्होंने किसी तरह मेरे तकिये के नीचे से चाभी निकाल ली।"

"और तीनों दिन वे उसी स्थान से लेते रहे? विचित्र बात है!" कृष्ण कुमार ने विचार प्रकट किया।

"नहीं, मैंने चाभी उसी स्थान पर नहीं रखी," रामकुमार ने समझाना शुरू किया।

"तब फिर उसे कहाँ रखी?" कृष्ण कुमार अब बहुत उत्सुक था।

"ओह! मैं चाभी को अलग-अलग स्थान पर रखता रहा," रामकुमार ने कहा। "लेकिन...."

कहानी पूरी करने से पूर्व, तुम निम्नलिखित बातों को ध्यान में रख सकते होः

- रामकुमार की वास्तविक व्याख्या क्या थी?
- वह चोर को पकड़ने में असफल कैसे रहा?
- कृष्णकुमार ने रामकुमार को क्या सलाह दी?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिखो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक दो। अपनी प्रविष्टि निम्नलिखित कूपन के साथ लिफाफे में भेजो जिस पर लिखा हो - "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।"

अन्तिम तिथिः ३० सितम्बर २००४

नाम --उम्र-----------जन्मतिथि-----------------------

विद्यालय --कक्षा-----------

घर का पता--

---पिनकोड--------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर　　　　　　　　　　प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

हाथी सम्मानित

हमलोग बच्चों के लिए बहादुरी के पुरस्कारों के अतिरिक्त ऑस्कार और नोबेल पुरस्कारों, बुकर व पुलिटजर तथा भारत के अपने ज्ञानपीठ पुरस्कार, और साथ ही, राष्ट्रीय पद्म पुरस्कारों से परिचित तो हैं; पर क्या कभी आपने हाथी के लिए पुरस्कार के बारे में सुना है? पद्मनाभन, केरल में गुरुवयूर नामक स्थान के कृष्ण मन्दिर का, जिसके अस्तबल में ७० हाथी हैं, प्रधान हाथी है जिसे पिछले दिनों 'गजरत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया। यह सम्मान उसे मन्दिर की पचास वर्षों तक उसकी सेवा के उपलक्ष में दिया गया।

पुरस्कार समारोह के पूर्व निकटस्थ ममीयूर मन्दिर से गुरुवयूर के ६० हाथियों की एक शानदार शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा के प्रसिद्ध कृष्ण मन्दिर पर पहुँचने पर मन्दिर के सम्मान के साथ पद्मनाभन का स्वागत किया गया।

सन् १९५४ में १८ जनवरी को पद्मनाभन गुरुवयूर मन्दिर में उपहार के रूप में आया था। तब यह १४ वर्ष का था। शीघ्र ही उसे इसके सुन्दर गठन और व्यवहार के लिए बधाइयाँ मिलने लगीं। यह अपनी लम्बी सूंढ के लिए प्रसिद्ध है जो कई तहों में आसानी से जमीन को स्पर्श करती है।

हाल में अन्यत्र मन्दिर की शोभा-यात्रा के लिए इसकी काफी माँग आने लगी। बोली २,२२,२२२ रु.की राशि तक पहुँच गई जो गुरुवयूर देवस्वम के हाथी को अबतक मिलनेवाली किराये की रकमों में सबसे अधिक थी।

कृपालु कोचुन्नी

शेरवुड जंगल के रॉबिनहुड के साहसिक कारनामों से तुम परिचित हो, हो न? सैकड़ों साल पहले वह लन्दन में रहता था और अमीरों का धन लूट कर गरीबों में बाँट देता था। केरल में, कुछ दिन पहले, कोचुन्नी रहता था जो धनी व्यक्तियों से नफरत करता था, खास कर उनसे जो अपने धन पर इठलाता और गरीबों को परेशान करता था। यह सच है कि वह चोरी करता था, लेकिन उसने चोरी के धन का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए कभी नहीं किया। वह सब धन गरीबों पर खर्च करता था। इससे गरीब लोग इसके मित्र बन गये, जबकि 'कायमकुलम कोचुन्नी' का नाम लेते ही धनी लोग काँपने लग जाते। दक्षिण केरल में कायमकुलम वह क्षेत्र था जहाँ कोचुन्नी चोरी और लूट-मार का धन्धा किया करता था।

वहाँ एक जमीन्दार रत्न-आभूषण गिरवी पर रख कर लोगों को ऋण दिया करता था। उनसे भारी सूद लेने के कारण वह बहुत धनी हो गया था। बहुत से कर्जदार जब समय पर ऋण नहीं चुका पाते थे तब गिरवी के रत्न-आभूषण वह अपने पास रख लेता था और बाद में उन्हें बेच देता था।

उसने अपने धन का एक अंश लगा कर एक भवन का निर्माण किया, जो वास्तव में एक क़िला जैसा ही था, क्योंकि ईंटों की दो तहों से उसकी दीवारें बनाई गई थीं। यदि उसके मित्र पूछते कि भवन पर इतना धन क्यों लगाया, तो वह धीमे से कहता, "कोचुन्नी का क्या भरोसा? कौन कह सकता है कि किसी दिन वह सेंध नहीं मारेगा। मुझे गिरवी के रत्न-आभूषणों की रक्षा करनी है।

मैं अब शान्ति से सो सकता हूँ। अब दस कोचुन्नी भी आ जायें तब भी वे घर में नहीं घुस पायेंगे।

उसका यह घमण्डपूर्ण दावा कोचुन्नी के कानों में पड़ा। वह जमीन्दार को पाठ सिखाने की ताक में था। एक दिन वह जमीन्दार के पास ऋण लेने आया। उसकी योजना यह थी कि यदि जमीन्दार ऋण देने से इनकार करेगा तब वह उसके घर में घुस कर उसका धन लूट लेगा। लेकिन जमीन्दार ने उसे तुरन्त ऋण दे दिया। अब कोचुन्नी दुविधा में पड़ गया। जमीन्दार को लूटना उचित नहीं होगा, उसने सोचा। फिर भी वह चाहता था कि जमीन्दार का घमण्ड टूट जाये।

कुछ दिनों के बाद कृष्णन नायर नाम कएक सज्जन ने अपने रत्नों को गिरवी पर रख कर एक हजार रुपये का ऋण लिया। कोचुन्नी को जब यह पता चला तब वह एक शाम को अन्धेरा हो जाने पर जमीन्दार के घर पर गया। उसने जमीन्दार की गतिविधियों पर नजर रखने के कारण जान लिया था कि उस समय वह कहाँ पर होगा और क्या कर रहा होगा।

जमीन्दार तेल मालिश करने के बाद अपने भवन परिसर के सरोवर में स्नान कर अपने उद्यान में टहल रहा था। जब कोचुन्नी ने उसे सरोवर की ओर जाते हुए देखा तब वह बरसाती के निकट जाकर जमीन्दार की आवाज की नकल करता हुआ इस प्रकार बोला मानों जमीन्दार अपनी पत्नी को कह रहा हो, "देखो, कृष्णन नायर कर्ज चुकाने के लिए रुपये देने आया है। इसे ले लो और रेशम

की थैली में रखे इसके आभूषण लौटा दो।"

उसकी पत्नी बरसाती में आई और उस व्यक्ति को उसने देखा जो रुपयों की एक थैली देने के लिए वहाँ खड़ा था। उसने वह थैली लेकर रख ली और अन्दर से उसके आभूषण की रेशमी थैली लाकर उसे वापस कर दी। कोचुन्नी तुरन्त वहाँ से खिसक गया। जमीन्दार तब इस बीच स्नान कर रहा था।

ऋण की अवधि समाप्त होने से पूर्व कृष्णन नायर सूद सहित ऋण चुकाने के लिए जमीन्दार के पास गया। जमीन्दार ने अन्दर जाकर तिजोरी खोली। वह घबरा गया। कृष्णन नायर के आभूषणों की रेशमी थैली वहाँ नहीं थी।

जमीन्दार ने पत्नी को बुला कर रेशमी थैली

के बारे में पूछा। "क्या तुम इतनी जल्दी भूल गये? अभी उसी दिन तो तुमने कृष्णन नायर से पैसे लेकर उसे उसके आभूषणों की रेशमी थैली वापस कर देने के लिए कहा था!" उसकी पत्नी ने कहा।

"तो फिर पैसे कहाँ हैं?" जमीन्दार ने फिर पूछा।

"तिजोरी में, लाल कपड़े में बँधा हुआ।" पत्नी ने उत्तर दिया।

जमीन्दार ने वहाँ रखी लाल कपड़े की एक पोटली को खोल कर देखा। पर यह क्या? उसमें रुपये की बजाय टिन के कुछ गोल टुकड़े थे।

कृष्णन नायर बाहर प्रतीक्षा कर रहा था। इसलिए जमीन्दार ने जाकर उससे क्षमा माँगते हुए कहा कि धोखा देकर उसके आभूषण को कोई ठग ले गया। उसने कृष्णन नायर से उसके आभूषणों का मूल्य पूछा और तदनुसार आभूषणों के बदले उसकी सन्तुष्टि भर पैसे देकर उसे विदा कर दिया।

जमीन्दार और उसकी पत्नी के चेहरे पर भय और आश्चर्य के मिश्रित भाव स्पष्ट झलक रहे थे। वे सोच रहे थे कि आखिर किसने उन्हें ठगने की हिम्मत की। "क्या तुम्हें उस आदमी का चेहरा याद है?" जमीन्दार ने पूछा।

"कैसे याद रखती? आखिर तुमने ही तो उससे पैसे लेकर आभूषण लौटाने के लिए कहा था।" उसकी पत्नी ने याद दिलाया। "मैंने समझा कि वह व्यक्ति कृष्णन नायर ही होगा।"

जमीन्दार के मन में परेशान कर देनेवाला एक विचार उभरा, "क्या वह कोचुन्नी था?" उसका नाम सुनते ही वह काँपने लगता था। "यदि वह मेरी आवाज की नकल कर मेरी पत्नी को बेवकूफ बना सकता है, तो क्या इससे भी बदतर क रने की कोशिश नहीं करेगा?" उसे सन्देह और भय हुआ।

कुछ घण्टों के पश्चात उसके घर के फाटक से और कोई नहीं, कोचुन्नी स्वयं घुसा। "क्या हुआ? तुम दोनों बड़े उदास दिखाई दे रहे हो?" वह बिना किसी भूमिका के बोल पड़ा।

जमीन्दार अवाक् रह गया। उसकी पत्नी ने हिम्मत कर जो कुछ हुआ था सब कुछ बता दिया।

कोचुन्नी ने मुस्कुराते हुए अपने शाल से एक रेशमी थैली निकाली और जमीन्दार को देते हुए

कहा, ''कृपया देख लो कि सभी आभूषण ठीक-ठाक हैं कि नहीं और कृष्णन नायर को बुलाकर उसके आभूषण लौटा दो तथा अपने पैसे वापस ले लो। मैंने सुना कि तुमने मुझे चुनौती दी थी कि मैं तुम्हारे किले के अन्दर नहीं घुस सकता। इसीलिए मैंने तुम्हारे साथ यह चाल चली।''

जमीन्दार ने हाथ जोड़ कर बहुत सम्मानपूर्वक कोचुन्नी से क्षमा माँगी। कोचुन्नी को बाद में पता चला कि जमीन्दार ने अपने तौर-तरीके बदल दिये हैं और अपने कर्जदारों को अब वह नहीं सताता। कोचुन्नी ने भी फिर कभी जमीन्दार को परेशान नहीं किया।

एक ईसाई मतावलम्बी खोपड़ा व्यापारी था। उसका व्यापार कभी फूला-फला नहीं, इसलिए प्रायः उसे सूदखोरों से भारी सूद पर ऋण लेना पड़ता था। कभी-कभी वह सूद के साथ ऋण लौटा देता था, लेकिन कभी व्यापार में घाटा हो जाने पर ऋण चुकाने के लिए किसी और से उसे ऋण लेना पड़ता था। फिर भी इस आशा से व्यापार किसी तरह खींचता रहा कि दुर्भाग्य के काले मेघों के बीच शायद कभी आशा की किरण दिखाई दे और फिर उसे ऋण न लेना पड़े।

एक दिन वह एलिपी से खोपड़ा बेचकर वापस लौट रहा था। उस दिन व्यापार में उसे कुछ भी लाभ नहीं मिला। इसलिए नाव में चिन्तित बैठा हुआ वह सोच रहा था कि रोजी-रोटी कैसे चलेगी। शाम का समय था और काफी अन्धेरा हो चला था। नाविक भी मौन था। शीघ्र ही उन्हें तेजी से आती हुई एक नाव के चप्पू की आवाज सुनाई पड़ी। उस नाव से एक व्यक्ति व्यापारी की नाव में कूद पड़ा। व्यापारी भय से थर-थर काँपने लगा।

उसने आगन्तुक को पहचान लिया। वह कोचुन्नी था। उसने प्रभावशाली आवाज में कहा, ''तुम कौन हो और कहाँ से आ रहे हो?''

''मैं खोपड़ा व्यापारी हूँ और एलिपी से वापस लौट रहा हूँ।'' व्यापारी रुक-रुक कर बोला।

''ओह! खोपड़ा व्यापारी! ऐलिपी में तुमने कुछ धन कमाया होगा,'' कोचुन्नी ने कहा,''सब माल चुपचाप रख दो और साफ बच जाओ।''

''कृपया, महोदय, मैं एक गरीब व्यापारी हूँ। मुझे मेहरबानी करके माफ कर दीजिये।'' व्यापारी ने विनती की।

''मैं कोचुन्नी हूँ। और तुम्हें मालूम है कि मेरी बात नहीं मानने पर तुम्हारा क्या हाल होगा!'' कोचुन्नी ने चेतावनी दी।

व्यापारी ने कपड़े की एक छोटी-सी थैली निकाली और कोचुन्नी को दे दी। ''इसमें कितने रुपये हैं?'' उसने व्यापारी से पूछा।

"केवल दो सौ पचास रुपये," व्यापारी ने खेद प्रकट करते हुए कहा।

"ठीक है, अब तुम जा सकते हो।" कोचुन्नी बोला और अपनी नाव में वापस कूद गया।

धर्मनिष्ठ ईसाई ने कृपालु प्रभु को धन्यवाद दिया क्योंकि उन्होंने कोचुन्नी द्वारा किसी शारीरिक आघात से उसकी रक्षा की थी। उसकी पत्नी बिलखती हुई बोली, "अब हम क्या करें? क्यों नहीं हमलोग अपने छोटे से घर को बेच दें और उस धन से व्यापर को जारी रखें।" उसकी नजर में और कोई चारा नहीं था।

व्यापारी उसकी राय से सहमत हो गयाऔर अपने घर का ग्राहक ढूंढने के लिए निकल पड़ा। क्योंकि यह लगभग संकटकालीन बिक्रय था, इसलिए कोई अच्छी कीमत देने को तैयार नहीं था। व्यापारी कम दाम पर घर बेचने को तैयार न था, क्योंकि फिर से व्यापार को आरम्भ करने के लिए उतना धन काफी नहीं होता।

एक दिन शाम को उसके घर पर कोई मिलने आया। "कोचुन्नी!" व्यापारी भय से काँपता कुर्सी से उछल पड़ा। "डरो नहीं, मैं तुम्हें परेशान करने नहीं आया हूँ। मैं उन रुपयों को तुम्हें लौटाने आया हूँ जो तुमसे उस रात को लिया था। मुझे उस समय भी अनुभव हो गया था कि तुम कोई धनी व्यापारी नहीं हो। बाद में मैंने तुम्हारे बारे में पता किया, जिससे मालूम हुआ कि तुम जीवन से संघर्ष कर रहे हो। उस शाम को मुझे कुछ रुपयों की सख्त जरूरत थी, इसलिए मुझे तुम्हारे कठिन श्रम से अर्जित पैसे लेने पड़े। मुझे इस बात का खेद है। मैं तुम्हारे पैसे लौटाने आया हूँ। यह रही तुम्हारे रुपयों की थैली।" कोचुन्नी ने कहा।

थैली लौटा देने के बाद कोचुन्नी बिना एक शब्द कहे वहाँ से चला गया। व्यापारी अवाक् मूर्तिवत् खड़ा का खड़ा रह गया। यह चोर है या फरिश्ता? क्या यह सच है या वह सपना देख रहा है? उसने थैली खोली तो देखा कि उसमें उन रुपयों से चार गुना धन था जो कोचुन्नी ने उससे लूटा था।

अब वह न केवल व्यापार को फिर से आरम्भ कर सकता था, बल्कि पूंजी भी लगा सकता था। उसने आसमान की ओर देखा और प्रभु से प्रार्थना की, "हे प्रभु! कृपया कोचुन्नी को आशीर्वाद प्रदान करें, क्योंकि उसके पास आखिरकार एक दयालु दिल है।"

रिश्वतखोर

श्रीकांत एक ज़मींदार था। उसका एक दीवान था। उसके अधीन कर वसूल करने वाले अधिकारियों में से एक शोभन था। वह अव्वल दर्जे का रिश्वतखोर था। जब दिवान को यह बात मालूम हुई, तब उसने शोभन को कड़ी चेतावनी देते हुए उसका तबादला दूर के एक गांव में कर दिया। वहाँ जाने के बाद भी शोभन छोटे-छोटे किसानों तथा व्यापारियों से रिश्वत लेने लगा। एक दिन उस गांव के एक ग्रामीण के सामने अपने भाई के खेत के पट्टे को लेकर समस्या खड़ी हो गयी। उसे अपने भाई के लिए यह पट्टा मंजूर कराना था।

वह ग्रामीण शोभन की कचहरी के एक कमरे में गया और वहाँ की मेज़ पर सोने का एक सिक्का रख दिया। फिर, जब शोभन दफ़्तर आ रहा था तब उससे रास्ते में मिला और अपने भाई की समस्या के बारे में बता चुकने के बाद उससे कहा, ''वह अब तक आपके इंतज़ार में कचहरी में बैठा हुआ था, एक ज़रूरी काम पर उसे चला जाना पड़ा।'' शोभन जैसे ही कचहरी में पहुँचा, उसने सोने का वह सिक्का अपनी जेब में डाल लिया। फिर भी, एक हफ़्ते तक पट्टे की मंजूरी नहीं मिली तो ग्रामीण ने शोभन से पूछा, ''साहब, पट्टे की समस्या जैसी की तैसी ही है।'' शोभन ने नाराज़गी का नाटक करते हुए कहा, ''तुम्हारा भाई जिस प्रकार एक हफ़्ते के पहले आया था, उसी प्रकार अक़्सर उसे आते रहना चाहिये। तभी यह काम पूरा होगा।''

''माफ़ कीजिये। वह आपके यहाँ अक़्सर नहीं आ सकता। वह अब दीवान के यहाँ नौकरी कर रहा है। वह जानना चाहता है कि पट्टे की मंजूरी के लिए कितनी रक़म देनी होगी।'' ग्रामीण ने कहा।

यह सुनकर शोभन अवाक् रह गया। उसने तुरंत कह दिया, ''पट्टा तो बहुत पहले ही से तैयार है। तुम ले जाओ,'' कहते हुए उसने पट्टे से संबंधित कागज़ात उसके सुपुर्द कर दिये।

- राजेश अवस्थी

प्रचारक को सीख मिली

एक सुख्यात धार्मिक विद्वान अपने धर्म की महानता का गुणगान करते कभी थकता न था। बड़े उत्साह के साथ वह देश-देश की यात्रा करता और लोगों को उपदेश देता कि प्रार्थना कैसे करनी चाहिये।

प्रचारक के देश का राजा, जो उसी का धर्मावलम्बी था, उसके प्रचार की कला से बहुत प्रभावित था। उसने उसके अधिकार में एक जलपोत की व्यवस्था कर दी, जिससे वह दूर-दूर के देशों की यात्रा कर सके। वह अपने मिशन से बहुत सन्तुष्ट था।

एक बार जब प्रचारक घर लौट रहा था तब पोत के कप्तान ने उसे एक छोटे टापू के बारे में बताया। ''सन्त पापा, इस टापू पर सिर्फ तीन एकान्तवासी रहते हैं। मैंने पानी लेने के लिए वहाँ रुकते समय अनेक बार उन्हें देखा है। वे अनजान लोगों से शायद ही कभी बोलते हों। मैं उन्हें शान्त बैठे अथवा प्रार्थना करते हुए देखता हूँ।''

''यही समय है जब मुझे जाकर उनकी सहायता करनी चाहिये!'' प्रचारक ने कहा। ''क्या तुम मुझे वहाँ ले चलोगे?''

''जैसा आप कहेंगे, वैसा करना मेरे लिए सौभाग्य होगा, सन्त पापा!'' कप्तान ने कहा।

जब पोत टापू के निकट पहुँचा तो प्रचारक की दृष्टि तीन वयोवृद्ध जनों पर पड़ी जो नाम मात्र के वस्त्र में लिपटे और हवा में लहराती लम्बी दाढ़ी को सहलाते पोत को निहार रहे थे। प्रचारक को उन पर दया आ गई। ''प्रभु उन पर कृपालु हैं, इसीलिए आज हम यहाँ उन्हें प्रार्थना की समुचित विधि सिखाने आये हैं,'' उसने अपने आप से कहा।

जब प्रचारक उनके अधिक निकट पहुँचा तब भी वे तीनों शान्त-स्थिर खड़े रहे। ''आप कैसे हैं मित्र? आशा है, प्रभु आप पर कृपालु हैं!'' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

इन तीनों ने एक दूसरे को इस प्रकार देखा मानों वे प्रचारक का तात्पर्य नहीं

समझ रहे हों। जब प्रचारक ने अपना मन्तव्य दुहराया तब उनमें से एक ने कहा कि उन्हें नहीं मालूम कि प्रभु अकृपालु भी हो सकते हैं।

प्रचारक शर्मिन्दा हो गया। जो भी हो, उसे अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। उसे प्रार्थना के पवित्र शब्द और विधि उन्हें सिखानी चाहिये।

''मित्रो, मैं समझता हूँ कि आप सब प्रार्थना करते हैं। पर कौन-सी विधि अपनाते हैं?'' उसने उनसे पूछा।

इन तीनों ने फिर एक दूसरे की ओर देखा। स्पष्ट था कि वे किसी खास विधि या नियम का पालन नहीं करते थे। काफी सवाल पूछने पर प्रचारक ने इतना समझा कि वे लोग यही दुहराते रहते थे: ''हे परमेश्वर, आप हैं और हम हैं।''

''बस, इतना ही?'' प्रचारक ने हँसते हुए पूछा। ''मित्रो, मैं बताऊँगा कि सबसे अच्छी तरह से प्रार्थना कैसे की जाती है, ऐसी प्रार्थना जो शांति और शक्ति प्रदान करे।''

एकान्तवासियों ने कुछ नहीं कहा लेकिन निश्चित रूप से उन्हें प्रचारक से कुछ सीखने में आपत्ति नहीं थी।

इसलिए उस भले प्रचारक ने एक घण्टा समय लगा कर उन्हें बताया कि ध्यान करने के लिए सही आसन या बैठने का तरीका क्या है और शास्त्रों से उद्धृत कर कुछ शब्द रटाये जो हर रोज प्रार्थना के रूप में उन्हें कहना चाहिये। बाद में, वह अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गया। वह सन्तुष्ट था कि उसने बहुत अच्छा काम किया है।

उसने कप्तान से कहा, ''यह सागर पर पोत चलाने के समान है। जब तक लक्ष्य तक जाने

का मार्ग न मालूम हो, तब तक हमेशा के लिए वह पोत चलाता रहेगा और कहीं नहीं पहुँचेगा।''

''बिलकुल ठीक, सन्त पापा। ये बेचारे एकान्तवासी अनिश्चित रूप से अपने अन्तिम दम तक बिना किसी परिणाम के प्रयास करते रहते, यदि आप की कृपा न होती।'' कप्तान ने कहा, जिसे स्वयं यह विश्वास था कि प्रचारक के घने संसर्ग से उसे लाभ हुआ है। उसे इस बात का गर्व था कि उसने इस महापुरुष को टापू का मार्ग बताया और इस प्रकार उन अज्ञानी भिक्षुओं के आध्यात्मिक लाभ का वह माध्यम बना।

सूर्यास्त तक पोत आगे बढ़ता रहा और धीरे-धीरे अन्धकार छा गया। रात के तीसरे पहर भारी तूफान आ गया और जहाज पर्वत जैसी ऊँची उत्ताल तरंगों पर डगमगाने लगा। जहाज पर सवार लोगों के प्राण खतरे में पड़ गये। कप्तान तथा उसका कर्मीदल आतंकित थे। कप्तान ने प्रचारक से कहा, ''सन्त पापा, केवल आप की प्रभु से

ने ही आसमान से उग्र बादलों को साफ कर दिया था और तूफान को शान्त कर दिया था।

प्रचारक को देखते ही वे रुक गये। ''हे पवित्र आत्मा, महाशय, आपने जो प्रार्थना की शिक्षा दी वह हमलोग भूल गये। क्या आप हमें एक बार फिर बताने की कृपा करेंगे?''

प्रार्थना हमें बचा सकती है।''

इस चुनौती को स्वीकार करना प्रचारक के बस की बात नहीं थी। सिर्फ़ वही जानता था कि वह चुनौती के मुकाबले में कमजोर है। लेकिन कर्मी दल में विश्वास पैदा करने के लिए उसे कुछ करना होगा। वह बाहर पोत की छत पर आ गया और तूफान और बारिश झेलता हुआ प्रार्थना करने की कोशिश करने लगा।

अचानक उसे लगा कि पूरब में तूफान थम गया है। जब वह उस दिशा में देख रहा था तो उसने पाया कि बादल अचानक छितरा गये और सागर पर दो छोटी धुंधली आकृतियाँ दिखाई पड़ने लगीं। भोर के मन्द प्रकाश में उन आकृतियों का आकार बढ़ने लगा और वे पोत की ओर निकट आने लगीं। वर्षा एक दम बन्द हो गई थी और वायु मन्द पड़ गई थी। प्रचारक को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वे आकृतियाँ मनुष्य की तरह हैं। देखो यह कमाल! शीघ्र ही उसने उन तीन एकान्तवासियों को जहाज की ओर लहरों पर दौड़ कर आते हुए देखा। इनके ज्योतिर्मय आभा मण्डल

उन तीनों ने पानी पर खड़े होकर और इस बात से गाफिल कि वे कुछ अविश्वसनीय कर रहे हैं, प्रचारक से पूछा।

काँपता हुआ प्रचारक छत पर घुटने के बल बैठ गया, "हे परमेश्वर के शिशु, तुझे कुछ सिखाने की जो मैंने धृष्टता की, उसके लिए मुझे क्षमा कर दे। मुझे सीख मिल गई है। मुझे क्षमा कर दे।'' उसने किसी तरह बुदबुदाने की कोशिश की।

''धन्यवाद'', एकान्तवासियों ने कहा और वे वापस मुड़ कर लहरों पर अनायास ही तेजी से दौड़ते हुए चले गये। प्रचारक छत पर साष्टांग दण्डवत कर रोता रहा। इन सबसे अनजान कप्तान बाहर आया, ''सन्त पापा, आपने कैसा चमत्कार कर दिया।''

प्रचारक और भी बिलखने लगा। सिर्फ वही जानता था वास्तव में किसने चमत्कार किया है, बिना जाने कि वे कर रहे हैं। उसने उन्हें परमेश्वर का सही रास्ता दिखाना चाहा था बिना यह जाने कि वे पहले से ही परमेश्वर में निवास कर रहे हैं।

-एम.डी.

विष्णु पुराण

महाराज दशरथ ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ बिना किसी विघ्न-बाधा के पूरा कर लिया। यज्ञ कुण्ड से अग्निदेव खीर का पात्र ले प्रकट हुए और उन्होंने यह पात्र राजा दशरथ को प्रदान किया। दशरथ ने यह खीर आधी-आधी कौशल्या और कैकेयी में बाँट दी।

राजा दशरथ के तीन रानियाँ थीं- कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा।

कौशल्या और कैकेयी ने अपने -अपने हिस्से से थोड़ी खीर सुमित्रा को भी दी।

चैत्र शुक्ल नवमी के दिन कौशल्या के गर्भ से विष्णु नील मेघ कान्ति के साथ श्रीराम के रूप में अवतरित हुए। कैकेयी के गर्भ से विष्णु के शंख और पद्म के अंश लेकर भरत प्रकट हुए। शेषनाग का अंश लेकर स्वर्णिम वर्ण के लक्ष्मण तथा विष्णु के चक्र और गदा के अंश से माणिक कान्ति वाले शत्रुघ्न सुमित्रा के गर्भ से पैदा हुए।

चैत्र शुक्ल नवमी को कोशल राज्य भर में रामनवमी के रूप में आनन्दोत्सव मनाया गया। इतने में तीसरा चैत्र आ पड़ा। अयोध्या नगर में चक्रवर्ती दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

चैत्र पूर्णिमा की दुधिया चाँदनी रात में दशरथ अपने महल में अपनी रानियों, चारों पुत्रों, मंत्री सुमंत्र, राज बंधुओं, तथा अन्तरंग सखा भद्र के साथ मिष्टान्न-भोज करने लगे।

कौशल्या राम को गोद में लिए चंद्रमा को दिखाते हुए खिलाने लगी। राम चाँद को लेने की ज़िद करने लगे और उसके लिए रोने लगे। उन्हें कई प्रकार से मनाया गया, फिर भी उन्होंने रोना
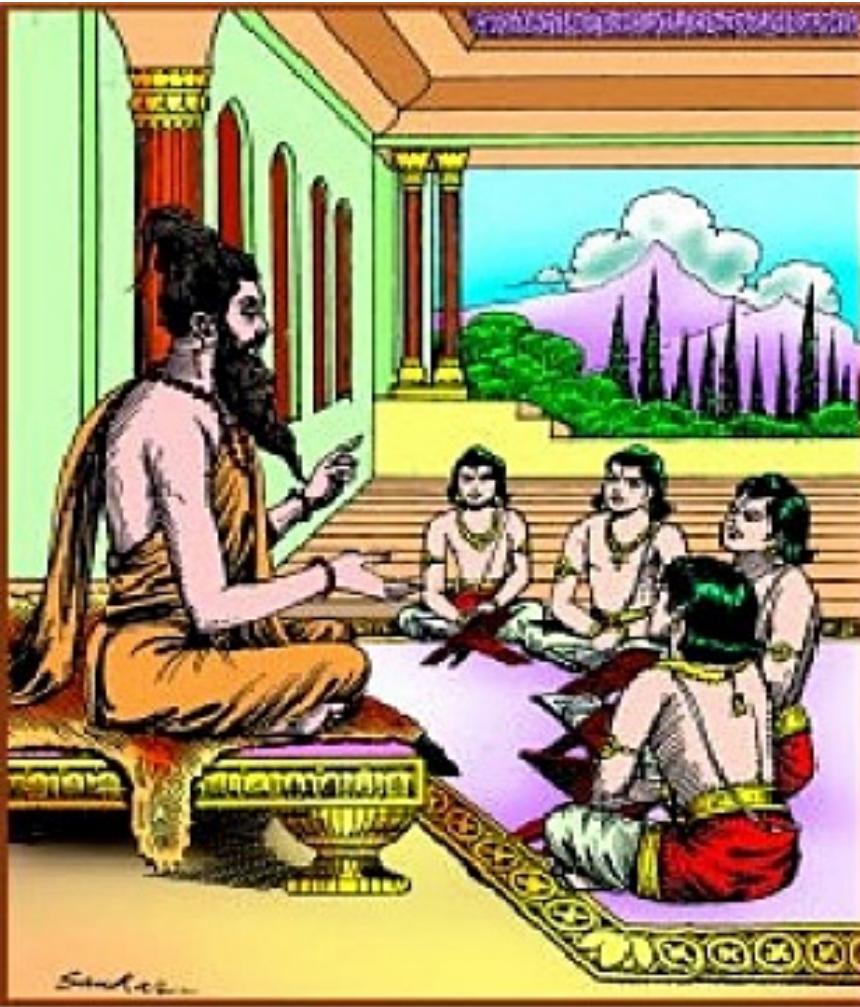
बन्द नहीं किया। इस पर सुमंत्र ने एक आइना मंगवाया और उसमें चाँद का बिम्ब दिखाया। तब राम प्रसन्नता के मारे उस आइने में चंद्र तथा अपने को देखते हुए ''रामचंद्र'' कह कर अपने नन्हें हाथों से तालियाँ बजाने लगे। उस दिन से वे रामचंद्र कहलाये। इसके बाद भद्र ने राम को गोद में लेकर आइने में दिखाते हुए पूछा- ''अब तो बताओ।'' तब राम ने उत्तर दिया - ''रामभद्र''। इसलिए वे रामभद्र भी कहलाये।

तभी लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न रामचंद्र के पास आकर खड़े हो गये। आइने में चाँद का बिम्ब छत्र जैसा दिखाई पड़ रहा था और पूरा दृश्य रामचंद्र के राज्याभिषेक जैसा प्रतीत हो रहा था। दशरथ के आनन्द की कोई सीमा न रही। तीनों माताएँ फूली न समाईं।

राजकुमार धीरे-धीरे बढ़ने लगे। लक्ष्मण छाया की भाँति सदा रामचंद्र के पीछे लगे रहते। उनके पीछे-पीछे भरत और शत्रुघ्न जुड़वें भाई के समान एक साथ खेलते हुए चलते।

वैसे वे चार भाई थे। पर वे सब मिल कर एक सम्पूर्ण रूप में दिखाई देते थे।

चारों राजकुमारों ने ब्रह्मर्षि बसिष्ठ से सारी विद्याएँ सीख लीं। रामचंद्र जी ने छोटी अवस्था में ही समस्त शास्त्र, वेद, वेदांग, धर्मसूत्र, योग-रहस्य आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

बसिष्ठ ने एक दिन रामचंद्र को समझाते हुए कहा, ''रामंचद्र! तुम्हारे वंश का मूल पुरुष सूर्य है, तुम रविराम हो, इक्ष्वाकु वंश के सिरमौर! तुम्हारे परदादा महात्मा रघु बड़े यशस्वी थे। तुम रघुकुल के चंद्र हो, रघुराम हो।''

महर्षि सूत नैमिशारण्य के मुनियों को जब रामचंद्र का प्रसंग सुना रहे थे तो मुनियों ने इनके पूर्वजों का इतिहास विस्तार से जानना चाहा।

तब महर्षि सूत उन्हें इस प्रकार सुनाने लगे-

''महाकल्प के प्रारम्भ में विवस्वत नाम से द्युतिमान हुए सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु हुए। वैवस्वत मनु के इक्ष्वाकु आदि दस पुत्र हुए। वे सब महान चक्रवर्ती हुए और उन सब ने इस पृथ्वी पर हजारों वर्षों तक राज्य किया।

इक्ष्वाकु वंश में दिलीप और रघु बड़े ही प्रतापी, धर्मात्म-चक्रवर्ती के रूप में यशस्वी हुए।

महाराजा दिलीप ने सन्तान प्राप्ति के लिए अपने कुल गुरु बसिष्ठ की सलाह माँगी। उनके

आदेशानुसार राजा कामधेनु की अंश नंदिनी की बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ सेवा-अर्चना करने लगे।

एक दिन महाराजा दिलीप नंदिनी को जंगल में चरा रहे थे। नंदिनी चरते-चरते एक गुफा में चली गई। उस गुफा में एक सिंह था। उस सिंह ने नंदिनी को पकड़ लिया। दिलीप ने सिंह पर बाण चलाना चाहा, किन्तु उनका हाथ रुक गया।

सिंह ने कहा, "हे राजन! यह गाय मेरे लिए आहार बन कर आई है। आप का मुझे मारना अधर्म होगा। इसीलिए आप के हाथ रुक गये।"

इस पर दिलीप ने कहा, "तुम नंदिनी के बदले मुझे खा लो, किन्तु इसे छोड़ दो।" राजा के मुख से यह उत्तर पाकर सिंह अदृश्य हो गया।

नंदिनी राजा दिलीप की भक्ति पर प्रसन्न होकर बोली, "महाराज! मैंने ही माया से आप को यह दृश्य दिखाया है। मैं आप की भक्ति की परीक्षा ले रही थी। आप उस परीक्षा में सफल निकले।"

नंदिनी ने राजा को सन्तान-प्राप्ति का वरदान दिया।

महाराजा दिलीप के पुत्र महाराजा रघु हुए। ये दान बीर के रूप में विख्यात हुए।

एक बार एक तपस्वी राजा के अतिथि बन कर आये। उनके मन की कामना को भांप कर राजा अपनी रानी को उस तपस्वी के आश्रम में छोड़ आये। तपस्वी ने अपनी गलती मान कर बड़ा पश्चात्ताप किया और भक्तिपूर्वक रानी के चरण-स्पर्श कर राजमहल में भिजवा दिया।

महाराजा रघु ने एक बार दान में दी हुई चीज़ को वापस लेने से इनकार कर दिया। इस पर रानी ने राजा से निवेदन किया कि इससे अच्छा यह है कि आप मेरा सिर काट लें। इस पर रघु ने सचमुच रानी का सिर काटने के लिए तलवार चला दी। किन्तु यह क्या! तलवार सिर से स्पर्श करते ही फूल बन कर बिखर गई। देवताओं ने उस राज दम्पति की निष्ठा और कर्त्तव्य परायणता पर प्रसन्न होकर उन पर फूलों की वृष्टि की।

महाराजा रघु ने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी और जब धन न रहा तब कुबेर के पास गये।

कुबेर ने आदरपूर्वक उनका स्वागत किया और उनकी इच्छा के अनुसार धन देकर विदा किया। रघु ने सारा धन याचकों में बाँट दिया।

महाराजा रघु के पुत्र थे अज। महाराजा अज बड़े शूर, बीर और पराक्रमी थे।

एक बार स्वयंवर में भोजराज की पुत्री इन्दुमती ने उन्हें वर लिया। राजा अज इन्दुमती को साथ लेकर चल पड़े। एक दिन राजा अज इन्दुमती के साथ उद्यान में घूम रहे थे। तभी आकाश मार्ग से नारद जी जा रहे थे। अचानक उनकी वीणा से लिपटी देवलोक की पुष्पमाला हवा में उड़ती हुई वहाँ आई और इन्दुमती के कण्ठ में जा पड़ी। इससे इन्दुमती की उसी घड़ी मृत्यु हो गई।

राजा अज पत्नी की मृत्यु देख शोक में रोने लगे। तभी नारद वहाँ प्रकट हुए तथा राजा को उन्होंने इन्दुमती के पूर्व जन्म की कहानी सुनाई।

एक बार तृणबिन्दु ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इंद्र ने हरिणी नामक अप्सरा को भेजा था। इस पर ऋषि ने हरिणी को मानवी जन्म का शाप दे दिया। हरिणी के अनुरोध करने पर ऋषि ने शाप से छूटने का उपाय भी बता दिया।

स्वर्ग की पुष्पमाला के उसके कण्ठ में पड़ते ही इन्दुमती को सुरबाला होने की याद हो आई। इसीलिए वह देवलोक वापस चली गई।

राजा अज के पुत्र थे-दशरथ। ये देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता करने के लिए जाया करते थे। एक बार वे इंद्र की सहायता करने के लिए शंभरासुर से युद्ध करने चल पड़े। राजा दशरथ के साथ कैकेयी भी युद्ध में चली गई। युद्ध करते समय दशरथ के रथ का पहिया निकला जा रहा था। कैकेयी ने अपनी उंगली को धुरी में डाल कर पहिये को रथ से निकलने से बचा लिया। रानी की वीरता से प्रसन्न होकर राजा दशरथ ने उसे दो वर देने का बचन दिया। पर कैकेयी ने कहा था कि समय आने पर मैं अवश्य मांग लूँगी।

राजा दशरथ शब्द भेदी बाण चलाने में दक्ष थे। एक बार ये प्रजा की फसलों को नष्ट करनेवाले जंगली हाथियों का शिकार करने निकले। तभी उस अन्धेरी रात में श्रवणकुमार अपने प्यासे माता-पिता के लिए कमण्डल से जल लेने एक जलाशय पर गये। जल लेने की आवाज़ सुन कर राजा दशरथ को शक हुआ कि फसल नष्ट करने वाले हाथी जलाशय पर पानी पी रहे हैं। दशरथ ने तुरंत आवाज़ की दिशा में तीर छोड़ दिया। तीर ठीक निशाने पर लगा और श्रवणकुमार घायल होकर चीखने-तड़पने लगा।

श्रवणकुमार की चीख सुनकर राजा दशरथ चौंक गये और शीघ्र ही दौड़ कर उसके पास

पहुँचे। मरते हुए श्रवण कुमार ने दशरथ से अपने प्यासे माता-पिता को जाकर जल पिलाने का अनुरोध किया। उन्होंने उन्हें पहले जल पिलाया, फिर दुर्घटना की सारी कहानी सुना दी।

पुत्रशोक में बिलखते हुए श्रवणकुमार के माता-पिता ने शाप देते हुए कहा, ''हे दशरथ! आप भी मेरेही समान पुत्र के शोक में अपने प्राण छोड़ेंगे।'' इतना कह कर मुनि दम्पति ने अपने प्राण त्याग दिये।

सूर्यवंशी राजाओं में शरणागत की रक्षा के लिए राजा शिवि विशेष रूप से विख्यात हुए। राजा शिवि की परीक्षा लेने के लिए इंद्र कबूतर तथा अग्निदेव बाज बन कर इनके पास एक बार आये। बाज कबूतर पर झपट रहा था और कबूतर रक्षा के लिए शरण ढूँढ रहा था। तभी कबूतर शरण लेने के लिए राजा शिवि की जांघ पर जा बैठा। राजा शिवि ने उसे रक्षा का वचन देते हुए बाज से कहा - ''कबूतर अपनी प्राण-रक्षा के लिए मेरी शरण में आया है। अतः इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है। लेकिन, साथ ही, मैं तुम्हारा आहार छीनना नहीं चाहता। इसलिए हे बाज, तुम इस कबूतर के वजन के बराबर मेरी जांघ का माँस खा लो।''

बाज ने राजा शिवि की बात मान ली। तराजू मंगाया गया। एक पलड़े पर कबूतर बैठ गया और दूसरे पर राजा शिवि अपनी जांघ का मांस काट काट कर चढ़ाने लगे। दोनों जांघों का मांस चढ़ाने पर भी कबूतर का वजन भारी ही रहा। तब राजा शिवि ने तराजू पर अपनी पूरी देह चढ़ा दी।

राजा शिवि के त्याग और दानवीरता पर प्रसन्न हो इंद्र और अग्नि अपने असली रूप में आ गये और उन्हें अनेक वर दिये।

क्षत्रिय होकर भी घोर तपस्या द्वारा वसिष्ठ के समान ही ब्रह्मर्षि पद पानेवाले विश्वामित्र भी सूर्य वंश के एक समय बड़े प्रतापी राजा थे।

इसी वंश में महान राजर्षि परम विष्णु भक्त राजा अम्बरीष हुए। लक्ष्मी स्वयं इनके घर में इनकी पुत्री के रूप में अवतरित हुई।

इनका नाम पड़ा-श्रीमती। श्रीमती बचपन से ही विष्णु को अपना पति मान कर इनकी आराधना करने लगी। अपने मोहक रूप और सौन्दर्य के लिए वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध थी।

श्रीमती का जन्म एक विशेष उद्देश्य को लेकर हुआ था।

देवर्षि नारद को एक बार यह गर्व हो गया कि मैं मोह-माया से परे हूँ। मुझ पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। एक बार नारद ने अपने इस गर्व की चर्चा पर्वत नामक एक ऋषि से भी की।

एक बार घूमते-घूमते नारद और पर्वत दोनों ऋषि राजा अम्बरीष के यहाँ पधारे। राजा ने उनका यथोचित आदर-सत्कार किया और अपनी पुत्री श्रीमती को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।

जब श्रीमती ने आशीर्वाद लेने के लिए दोनों ऋषियों को प्रणाम किया, तभी उन दोनों पर विष्णु की माया छा गई। वे दोनों श्रीमती का सौन्दर्य देख कर सारा ज्ञान भूल गये और उससे विवाह करने को दोनों आपस में लड़ने लगे।

राजा अम्बरीष को ऋषियों के इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ। श्रीमती के अनुरोध पर अम्बरीष ने उसके विवाह के लिए स्वयंवर की घोषणा कर दी। स्वयंवर की घोषणा सुन कर दोनों ऋषि वहाँ से चले गये।

स्वर्ग में वापस जाकर भी नारद श्रीमती को भूल न सके और उससे विवाह करने के लिए विष्णु से अपना सुन्दर रूप देने की प्रार्थना की।

इधर पर्वत ईर्ष्यावश विष्णु से यह अनुरोध करने आया कि स्वयंवर में जाने के लिए वे नारद को बन्दर का मुख दे दें। विष्णु ने पर्वत की यह बात मान ली।

कोरिया की एक पौराणिक कथा

एक धनी दम्पति का एक लौता बेटा था- जिन हो। जिन-हो की देखभाल के लिए उसके माता-पिता ने एक बूढ़ा नौकर रखा जिसका नाम था वान-क्यून। इसके पास कहानियों का एक खजाना था। ये कहानियाँ भयानक परदार साँपों तथा क्रूर बाघों के बारे में थीं;कुछ अच्छी परियों, सुन्दर राजकुमारियों के बारे में और कुछ बहादुर नायकों तथा सहृदय राजाओं के बारे में थीं।

इन कहानियों के बारे में विचित्रता यह थी कि हरेक कहानी में एक प्रेतात्मा निवास करती थी। जिन-हो को ये कहानियाँ इतनी पसन्द थीं कि वह नहीं चाहता था कि इन कहानियों को कोई और सुने। वह अपने दोस्तों को भी नहीं सुनाना चाहता था और न यह चाहता था कि उसका नौकर दूसरों के सामने इन्हें दुहराये। इन सब का अर्थ यह था कि प्रेतात्माओं को बन्दी बना कर रखा जाये।

नौकर-सह-कहानी वाचक वान-क्यून ने चमड़े का एक कामचलाऊ थैला बनाया जिसके ऊपर खींचडोरी लगी थी। यह जिन-हो के शयन-कक्ष की दीवार पर टंगी रहती थी। हर रात जब वह सोने से पहले कहानी सुनना चाहता तब नौकर अपनी गोद में थैले को रख लेता और जैसे ही कहानी खत्म होने को होती, वह डोरी को ढीला कर थैले का मुँह इतना ही खोलता कि कहानी की प्रेतात्मा उसके अन्दर जा सके। प्रेतात्मा तभी बाहर आ सकती थी जब वही कहानी किसी दूसरे को फिर से कही जाये। वान-क्यून दीवार पर टांगने से पहले थैले को कस कर बाँध देता।

यह सिलसिला कई दिनों, सप्ताहों, महीनों और वर्षों तक चलता रहा। इस अवधि में जिन-हो या वान-क्यून किसी के द्वारा कोई कहानी दुहराई नहीं गई और प्रेतात्माएँ थैले के अन्दर बन्द रहीं, बिना किसी आशा के कि वे कभी मुक्त हो पायेंगी। कहानी के वर्णन और श्रवण में जिन-हो और वान-क्यून इतने उत्साहित और उत्तेजित

रहते थे कि वे चमड़े के थैले से प्रेतात्माओं की भुन -भुनाहटें सुन नहीं पाते थे।

जिन-हो १५ वर्ष का हो गया, यह किसी को पता ही नहीं चला। उन दिनों कोरिया की प्रथा के अनुसार जिन-हो विवाह के योग्य हो गया था। उसके माता-पिता ने एक सुन्दर सी कन्या की खोज कर ली थी। वह कन्या एक धनी व्यापारी की बेटी मिन-जी थी।

शीघ्र ही विवाहोत्सव का दिन आ गया। सबेरे-सबेरे जिन-हो और उसके पिता समारोह के लिए दुल्हन के घर जाने को तैयार हो गये। जो बाकी लोग घर में बच गये, वे दुल्हन के स्वागत की तैयारी में व्यस्त हो गये।

वृद्ध सेवक वान-क्यून, जो घर ही पर रह गया था, घर के चारों ओर घूम कर देखने लगा मानों वह हर कार्य की विस्तार से जाँच-पड़ताल कर रहा हो। एक बार उसने जिन-हो के शयन-कक्ष में झाँक कर देखा। उसे लगा जैसे कुछ लोग भुनभुना रहे हों। वह कुछ देर के लिए वहीं रुक गया और ध्यान से सुनने लगा। अचानक उसका ध्यान चमड़े के थैले की ओर गया। वह हिल रहा था और उसमें कम्पन हो रहा था। उसने अनुमान लगाया कि भुनभुनाहट की आवाजें थैले की प्रेतात्माओं से आ रही हैं। वान-क्यून दबे पाँच थैले तक आया और कान लगा कर सुनने लगा। प्रेतात्माएँ आपस में इस प्रकार बातें कर रही थीं:

"लड़के की आज शादी हो रही है। हमलोगों को दम घोट कर बन्दी बनाने का बदला चुकाने का अवसर आ गया। उसे हमलोग मार दें। उसके मरने के बाद कोई थैला खोल सकता है और तब हम सब आजाद हो जायेंगे।"

"हाँ, हाँ, वही करें। लेकिन कैसे?"

"आह! मैं जहरीले कुएं की प्रेतात्मा हूँ। मैं इसे उस मार्ग पर रख दूँगी जहाँ से वह लड़का दुल्हन के घर जाते हुए गुजरेगा। जब उसे प्यास लगेगी वह निश्चित रूप से प ानी पीने के लिए रुकेगा। और तब.....हा! हा! हा!"

"बहुत खूब! यदि वह पानी के लिए नहीं रुकेगा तो मैं जहरीले हिसालू की कहानी की प्रेतात्मा हूँ। मैं उसके मार्ग पर इतना नीचे झुक जाऊँगी कि वह मुझे तोड़ कर खाना चाहेगा। और फिर...हा! हा! हा!"

"यदि वह दुल्हन के घर तक बिना पानी पीये और बिना हिसालू खाये पहुँच जायेगा तो मेरी

कहानी में एक लाल गर्म कुरेदनी है, जिसे मैं दरवाजे पर रखे उस रेशमी गद्दे में छिपा दूँगी जिस पर वह पाँव रखेगा। और तब....हा! हा! हा!!''

''और यदि वह उससे भी बच निकलेगा तो मेरी कहानी में एक घातक सर्प है जो दुल्हन के बिस्तर के नीचे छिप जायेगा। रात में वह बाहर आकर लड़के को काट लेगा। और तब...हा ! हा! हा!''

''बहुत अच्छा, बहुत अच्छा!'' दूसरी प्रेतात्माओं ने समवेत स्वर में कहा।

भला वृद्ध वान-क्यून अपने मालिक का स्वामी-भक्त सेवक था और उस बालक को बहुत प्यार करता था। इसलिए वह प्रेतात्माओं के षड्यन्त्र को सुन कर डर गया। वह जानता था कि वे प्रेतात्माएं थैले के अन्दर बन्द हैं, फिर भी वे दुष्टता को कार्यान्वित करने की शक्ति रखते थे।

सेवक मालिक के पास गया; वह एक श्वेत घोड़े पर सवार था। ''मालिक महाशय'', उसने बिनती की, ''आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है और मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं छोटे मालिक के घोड़े की अगुवानी करूँ!''

''बहुत अच्छा, वान-क्यून'', जिन-हो के पिता ने कहा, ''तुम्हें मेरी अनुमति है।''

वान-क्यून बहुत प्रफुल्लित था, इसलिए नहीं कि विवाह के बरात में उसे मुख्य स्थान दिया गया था, बल्कि इसलिए कि अब वह सुनिश्चित रूप से मार्ग के खतरों से अपने छोटे मालिक की रक्षा कर सकेगा।

जैसा कि वान-क्यून को डर था, जिन-हो ने मार्ग में एक कुएं को देखा और वहाँ रुक कर एक प्याला पानी माँगा। वान-क्यून अपने छोटे मालिक को जहरीला पानी पीने से रोकना चाहता था। ''छोटे मालिक, पानी लाने में देर लगेगी। तब तक इन्तजार करने में आप को पसीना आने लगेगा, क्योंकि धूप तेज है और आप की शादी की पोशाक में दाग लग जायेंगे।''

जिन-हो बहुत प्यासा था, लेकिन उसने सोचा कि नौकर ठीक कह रहा है। उसने घोड़े को एड़ लगाई। कुछ दूर आगे जाने पर जिन-हो को मार्ग में नीचे लटके हुए रसीले हिसालू का पेड़ मिला। ''अहा! इनसे मेरी प्यास बुझ जायेगी! वान-क्यून, मेरे लिए कुछ हिसालू ला दो।''

सेवक ने आतंकित चेहरा बना कर कहा, ''मेरे छोटे मालिक!'' उसने जिन-हो को अपनी ओर

खींच लिया। ''यह आप क्या कर रहे हैं? आज आप का बिवाह होने जा रहा है। आज के दिन आप रास्ते पर का हिसालू खायेंगे?'' उसने लगाम खींच ली और घोड़ा आगे बढ़ गया।

बरात और आगे बढ़ी। शीघ्र ही वह दुल्हन के घर पर पहुँच गई। दो नौकर दौड़ कर दुल्हे के लिए एक रेशमी गद्दा ले आये, जिस पर वह पाँव रखता। बान-क्यून इसे झपट कर लेते हुए बोला, ''देखो, यह कितना चिकना है। मेरे मालिक फिसल कर गिर सकते हैं। लकड़ी का स्टूल ले आओ।'' उसने आदेश दिया।

जिन-हो, उसके पिता, दुल्हन के पिता- सभी भौचक्का रह गये। कोई लकड़ी का एक स्टूल ले आया। बान-क्यून की सहायता से जिन-हो घोड़े से नीचे उतरा।

बरात एक सजे-सजाये उद्यान में पहुँची जहाँ समारोह के लिए एक मंच बना हुआ था। चमचमाते आभूषणों से अलंकृत तथा बहुमूल्य परिधान से सुसज्जित दुल्हन मिन-जी सहेलियों के साथ आई और उसे मंच पर आसीन किया गया। शीघ्र ही समारोह आरम्भ कर दिया गया। इसके बाद एक शानदार भोज और नृत्य का कार्यक्रम हुआ। अब रात में उनके विश्राम का समय आ गया। जैसे ही वर-वधू वैवाहिक कक्ष में जानेवाले थे कि बान-क्यून एक बड़ा चाकू लेकर दौड़ा हुआ आया। क्या हुआ, इसका अनुमान कोई लगाये, इसके पहले ही बूढ़े नौकर ने पलंग का बिछावन खींच लिया और वहाँ छिपे साँप को मार डाला। देखनेवालों के मुँह से आह निकल गई। जिन-हो और मिन-जी के पिता आगे बढ़े।

''पिता'', जिन-हो, जो अपनी घबराहट से अब तक उबर चुका था, बोला, ''बान-क्यून ने हमलोगों की जान बचा ली!''

सेवक दूसरे दिन तक वहीं रहा। जब जिन-हो मिन-जी को अपने घर ले आया और सबने प्रीति भोज का आनन्द लिया। बान-क्यून नवविवाहित दम्पति के कमरे में गया और बोला, ''मैं कल के अपने विचित्र व्यवहार के बारे में बताना चाहता हूँ।'' और फिर उसने चमड़े के थैले में बन्द प्रेतात्माओं की करतूतों की कहानी सुना दी।

मिन-जी ने ही पहले सोचा कि क्या करना चाहिये। वह पति की ओर मुड़ कर बोली, ''जिन हो! आज से तुम मुझे कहानियाँ सुनाओगे और एक-एक कर उन सभी प्रेतात्माओं को आजाद कर देंगे।''

ऋण- मुक्ति

एक गाँव में रंगनाथ नामक एक पक्का कंजूस था। धनी होते हुए पर एक दरिद्र की ज़िंदगी जीता था।

कुछ समय बाद रंगनाथ की पत्नी का देहांत हो गया। उसके एक बुद्धू लड़का मात्र रह गया। रंगनाथ उसे सिर्फ़ कांजी पीने को देता था, इसलिए वह हमेशा खाने की चिंता में पड़ा रहता, कहीं एक कौड़ी मिल जाती तो दूकान में जाकर कुछ खरीद लेता और खाता।

रंगनाथ ने पैसे जोड़ने का एक उपाय किया। उसने अपने घर के एक कोने में एक गड्ढा खोद कर उसमें एक घड़ा गाड़ दिया और उसके ढक्कन में पैसे डालने लायक़ एक छोटा-सा छेद बनाया। ऊपर से देखने पर घड़े का पता न लगता था। रंगनाथ की जो आमदनी होती, उसमें से थोड़े से पैसे अपने खर्च के लिए रख लेता, बाक़ी पैसे घड़े में छेद की राह से डाल देता था।

अपने पिता की यह करनी बेटे ने देख ली, पर उसकी समझ में न आया कि उसका पिता इस प्रकार ज़मीन में पैसे क्यों डाल रहा है। एक दिन उसने अपने पिता से पूछा - ''बाबूजी, तुम दूसरे जून के लिए चावल तक खरीदे बिना ये पैसे जमीन में क्यों छोड़ रहे हो?''

रंगनाथ ने समझाया - ''बेटा, जमीन में हमारे ऋणदाता हैं। उन्हें हमें बहुत -सा धन देना है। हम गरीब हैं, इसलिए एक साथ पूरा ऋण चुका नहीं सकते, रोज थोड़ा- थोड़ा करके मैं उनका ऋण चुका रहा हूँ।''

इस बात पर बेटे ने बिश्वास कर लिया और सोचा कि उसका पिता इसी वजह से कंजूसी कर रहा है । उसके मन में ऋणदाताओं पर क्रोध भी आया। उस ने कहा - ''बाबूजी, उन लोगों की वज़ह से हम अपने पेट काट रहे हैं। उन्हें ऋण चुकाना छोड़ हम भर पेट खा लें तो क्या होगा?''

अपने बेटे का यह रवैया देख पिता को लगा कि वह उसके प्रयत्न में अडंगा लगाना चाहता है, इसलिए उसे डराने के ख्याल से रंगनाथ ने कहा, ''बेटा, सुनो! हमारे ऋणदाता साधारण आदमी नहीं हैं। अगर हम एक दिन भी पैसे डालना छोड़ दें तो वे लोग बड़ी - बड़ी तलवारें और भाले लेकर हमें मारने आ धमकेंगे। उन्हें देखते ही हमारे प्राण उड जाएँगे ।''

रंगनाथ के बेटे के दिमाग में ये बातें बैठ गईं।

जाड़े के दिनों में एक दिन रात को एक बैरागी भोजन के वक़्त आ पहुँचा और दर्वाज़ा धकेल कर अंदर प्रवेश करते हुए बोला, ''आप धर्मदाता हैं, मुट्ठी भर खाना खिलाइये।''

इसे देख रंगनाथ को बड़ा गुस्सा आया। वह चिल्लाकर बोला - ''क्या इसे तुम अपने बाप-दादे की बनवाई सराय समझते हो?''

बैरागी चकित हो गया और बिनती के स्वर में बोला, ''महाशय, खाने की बात भगवान जाने! मुझे आज की रात को बरामदे में सोने दो। बाहर बड़ी सर्दी पड़ रही है।''

रंगनाथ को और गुस्सा आया, ''अबे, क्या तुम्हारी सेवा करने के लिए मैं थोड़े ही तुम्हारा कर्जदार हूँ? जाओ।'' यों कहते बैरागी की गर्दन पकड़कर उसे बाहर ढकेल दिया।

''मेरे नहीं तो और किसी के ज़रूर कर्ज़दार होगे, इसीलिए उपवास करते हुए पैसे जोड़ रहे हो। तुम जो भी कमाते हो, उसे भोगने का भाग्य तुम्हारी क़िस्मत में नहीं है!'' बैरागी बोला।

''तुम जैसे पापियों को घर में रखूँ तो यही होगा। आज रात बाहर सर्दी में रहोगे तो पता चल जाएगा।'' रंगनाथ ने कहा।

''समय आने पर तुम्हारी भी यही हालत होगी, इसलिए उछलो मत।'' बैरागी ने कहा।

''अरे, क़िले जैसे घर के होते मेरी ऐसी हालत क्यों होगी? अबे, तुम जैसे क़मबख़्तों के लिए ही ये सारी गलियाँ पड़ी हुई हैं।'' यों कहते रंगनाथ ने झट से किवाड़ बंद कर लिये।

कुछ दिन बाद रंगनाथ को कहीं यात्रा पर जाना पड़ा। उसने अपने बेटे से कहा, ''बेटा! घर की ठीक से देख-भाल करना। रोज़ जो पैसे मिलते हैं, उन्हें जमीन में डाल दिया करना। रात के वक़्त वहीं पर खाट लगाकर सो जाना। मैं दो-तीन दिनों में लौट आऊँगा।''

रंगनाथ के बेटे के हाथ जो पैसे लगते, उन्हें ज़मीन में डाल देना उसे कतई पसंद न था। इसलिए वह खाने की चीज़ें ख़रीदकर खा लेता था। इस तरह दो दिन बीत गये । तीसरे दिन आधी रात के वक़्त किसी ने दर्वाजा खटखटाया। रंगनाथ का बेटा उठ बैठा और जाकर किवाड़ खोल दिये। तब तीन चोर तलवार और भाले लेकर घर के भीतर घुस पड़े।

उन्हें देखते ही रंगनाथ के बेटे को अपने पिता की बातें याद आ गईं। उसने सोचा कि ये लोग ज़रूर ऋणदाता होंगे। उसने पिछले दो दिनों से ज़मीन में पैसे डाले नहीं थे। इसलिए अपने पिता के कहे अनुसार वे लोग आ गये हैं।

यह सोचकर उसने चोरों से कहा, ''हे ऋणदाताओ, मुझे माफ़ कर दो। दो दिनों से मेरे हाथ कुछ पैसे न लगे, इसलिए मैंने ज़मीन में पैसे नहीं डाले। मेरे बाप अगर घर में होते तो तुम लोगों के लिए कुछ न कुछ डाल दिये होते । वे इस वक़्त घर में नहीं हैं। कल मैं तुम लोगों का पूरा पैसा उसमें डाल दूँगा।''

चोरों की समझ में कुछ नहीं आया लेकिन यह बात स्पष्ट हो गई कि उनके वास्ते कहीं न कहीं पैसे डाले जा रहे हैं ; इसलिए उनमें से एक ने कहा, ''बताओ तो, तुम्हारा बाप पैसे कहाँ डाल रहा है?''

इस पर रंगनाथ के बेटे ने खाट को सरकाया और जहाँ घड़ा खोदकर गाड़ दिया गया था, वह जगह उन्हें दिखा दी। चोरों ने उस जगह को खोदकर घड़े को ऊपर निकाला। उसमें बहुत से छुट्टे पैसे भरे थे। चोर घड़े को लेकर भाग गये।

दूसरे दिन रंगनाथ घर लौट आया। घड़े की जगह केवल गड्ढे को देख उसका दिल कांप उठा और ''मेरा घड़ा! मेरे पैसे!'' चिल्लाते-रोते वह अपने बाल नोचने लगा।

अपने बाप की यह हालत देख बेटे ने पूछा, ''पिताजी, आप दुखी क्यों होते हैं? चोर थोड़े ही ले गये हैं?''

''तब तो क्या तुमने निकालकर कहीं छिपा रखा है?'' रंगनाथ ने पूछा।

''तुम घबराओ मत! यह धन उन्हीं का था, इसलिए वे ले गये हैं।'' बेटे ने समझाया।

ये बातें सुन रंगनाथ का क्रोध भड़क उठा। उसने अपने बेटे का गला दबाते हुए पूछा, ''कौन

थे वे लोग? मेरा धन उनका कैसे हो सकता है?''

"उस दिन तुमने कहा था न, वे ही ऋणदाता आये थे।'' इन शब्दों के साथ बेटे ने रंगनाथ को सारी कहानी सुनाई।

"अरे, मेरी अक़्ल बरने गई थी इसीलिए मैंने ऐसा कहा था । वे लोग ऋणदाता नहीं थे! चोर थे। तुम्हारी बेवकूफी की बज़ह से मेरा घर डूब गया। अजनबी लोग आकर रात के वक़्त दर्वाजा खटखटा दे तो क्या अक़्ल रखनेवाला कोई दर्वाज़ा खोल सकता है?'' रंगनाथ ने पूछा।

लड़के ने सोचा कि उससे गलती हो गई है, भविष्य में ऐसा नहीं करना चाहिए।

इसके बाद रंगनाथ ने सोचा कि उसके साथ जो अन्याय हो गया है, इसके संबंध में अदालत में फ़रियाद करे तो अपने धन के सारे में सब लोगों को पता चल जाएगा। यह सोचक र वह रात के वक़्त चोरों को खोजते आसपास के सभी गाँवों में घूमने लगा।

एक दिन आधी रात को घर लौटकर उसने अपने घर का दर्वाजा खटखटाया, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। बेटे को कई बार पुकारा, फिर भी दर्वाजा न खुला। अपने लड़के की मूर्खता पर पछताते रंगनाथ दर्वाज़े से सटकर लुढक गया। रात भर सर्दी में ठिठुरता रहा, सबेरा होते उसकी आँखें झपक गयीं।

उस वक़्त उस रास्ते से जानेवाले बैरागी ने रंगनाथ को थपकी देक र जगाया औ र पूछा, "अजी, क़िला जैसे बड़े मकान के होते तुम इस सर्दी में गली में क्यों लेटे हो?''

"भाई साहब, क्या बताऊँ? उस दिन तुमने जो बातें कहीं, वे शाप बनकर मुझे लग गईं। मैंने अपना धन न किसी को दान में दिया और न खाया ही, सारा का सारा चोरों के हाथ लग गया।'' रंगनाथ ने कहा।

"वे लोग चोर नहीं, ऋणदाता हैं। तुम्हारी ऋण-मुक्ति हो गई, इसके लिए खुश हो जाओ।'' यों कहते बैरागी आगे बढ़ गया।

उस दिन से रंगनाथ का मन बदल गया। वह भर पेट खाते, दूसरों को भी खिलाते आराम से अपने दिन बिताने लगा।

आर्य

अज्ञात राजकुमार का रहस्य

चित्र : गाँधी अय्या

वनवास के कुछ वर्षों के बाद शान्ति देव छद्मवेश में, राज्य हड़पनेवाले वीर सिंह के विरुद्ध विद्रोह करनेवालों का मार्गदर्शन करते हैं। वे जयानन्द मुनि से मिलते हैं जो यह सलाह देते हैं कि वे अपने बेटे को आश्रम में ही पलने-बढ़ने दें। वे विद्रोही नेता वसन्त को सावधान करते हैं कि उसके निभृत स्थान पर आक्रमण हो सकता है। मुठभेड़ में सेनापति अमरसिंह की जान चली जाती है और शान्तिदेव गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं।

वसन्त शान्तिदेव को जलप्रपात के निकट एक गुफा में ले जाता है। उन्हें जमीन पर लिटाने के बाद वह पानी लाने के लिए जाता है।

बसन्त, याद रखो, मैंने तुम्हारे किसी आदमी को अपना परिचय नहीं दिया है!
मैंने भी किसी को कुछ नहीं कहा है।

महाराज! जख्म ज्यादा गंभीर नहीं होगा। जैसे ही सुबह होगी....
बसन्त, मैं सुबह तक शायद न रहूँ....

बसन्त छाती से रक्त बहते हुए देखता है। वह अपनी पगड़ी से पट्टी बाँध देता है।
आप सब कुछ कल बता दीजियेगा।
बसन्त, कल....

...कल अधिक बिलम्ब हो सकता है। मेरी अनुपस्थिति में भी तुम आन्दोलन अवश्य जारी रखना।

महाराज, कृपया परेशान न हों। यदि आप ही न रहे...

...तो किसके लिए हम लड़ेंगे? रानी नहीं रही...राजकुमार न रहा..
राजकुमार...वह... जीवित है.... बसन्त !

क्या राजकुमार जीवित है?
वह स्वामी जयानन्द के पास है। उसका संरक्षक बन कर उसकी देखभाल करना बसन्त। एक दिन वह अपना...

बसन्त धीरे-धीरे राजा का सिर जमीन पर रख देता है...

...और गुफा के मुहाने पर जाकर भोर होने की प्रतीक्षा करता है।

राजकुमार जयानन्द के पास है। मैं मुनि से सलाह लूँगा। क्या किसी का पदचाप सुन रहा हूँ?
वसन्त को आश्चर्य हो रहा है...
ये युवा आश्रवासी लग रहे हैं।
हमलोग योगी जयानन्द के शिष्य हैं।
उन्होंने हमें राजा के शरीर को आश्रम में ले जाने के लिए भेजा है।
तो मुनि पहले से राजा की मृत्यु से अवगत हैं?
हाँ, उन्हें गत रात को यह मालूम हो गया।
एक शिष्य राजा के शरीर की अरथी तैयार करता है।
...लेकिन वे चाहते थे कि हमलोग सुबह होने पर ही आरम्भ करें....
....उन्होंने कहा कि रानी के निकट ही राजा को समाधि दी जायेगी।
वसन्त और तीन आश्रमवासी राजा की अरथी उठाते हैं।
सुबह होने के तुरन्त बाद वे आश्रम पहुँच जाते हैं...
...जहाँ जयानन्द राजा की अरथी का स्वागत करने के लिए बाहर आते हैं।

शरीर को
गड्ढे में रखो।
बसन्त की नजर ऊपर
उठती है और वह एक छोटे
बालक को देखता है।
राजकुमार!
बालक जयानन्द के निर्देशानुसार
अनुष्ठान सम्पन्न करता है।
शरीर को गड्ढे के नीचे उतारा जाता है। राजकुमार शरीर
पर फूल छिड़कता है।
आर्य, अब
उन्हें गड्ढे को
भरने दो।
जयानन्द के संकेत से शिष्य चले जाते
हैं।
बसन्त योगी को प्रणाम
करता है।
हे प्रज्ञापुरुष !
कृपया हमें आशीर्वाद
दें।
वत्स! मैं जानता था कि भाले के
आघात के बाद शान्तिदेव बच
नहीं पायेंगे।
मैंने निश्चय
कर लिया था कि उन्हें कहाँ
पर समाधिस्थ किया जायेगा।
क्रमशः
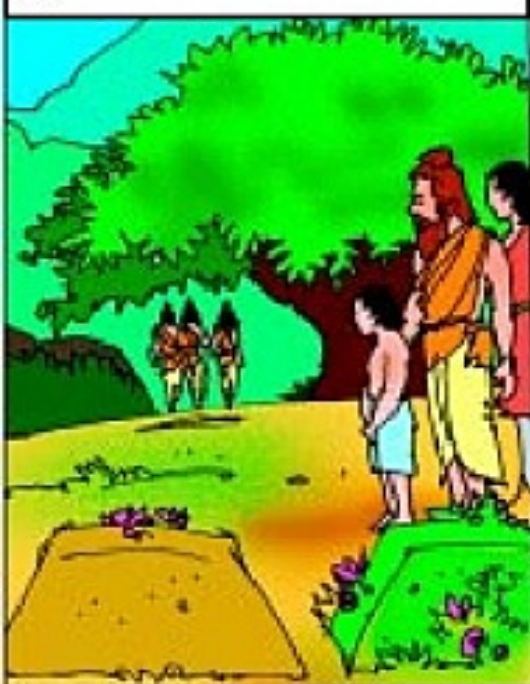
वे मूल्यवान बून्दें

"**छी!** कितनी ऊमस है आज!" बीना के पिता सोफा पर आह भर कर बैठते हुए बोले। वे टाई खोलते हैं और जूते निकालते हैं। बीना दौड़ कर एक गिलास ठण्ढा पानी लाती है।

तभी बीना की माँ आ जाती है। वह परेशान सी दिखाई पड़ती है।

"क्या बात है राधिका?" बीना के पिता पूछते हैं।

"दो घण्टों से पानी बन्द है।" राधिका बताती है। "मैं पता करने गई थी कि पानी कब आयेगा। एक सप्ताह में यह तीसरी बार ऐसा हो चुका है। लगता है कि हमारे कॉम्प्लेक्स में चारों बोर बेल्स का जल-स्तर बहुत नीचे चला गया है; एक दिन छोड़ कर पम्प चलाया जाता है। यदि स्थिति और बिगड़ गई तो तीन दिनों में एक बार ही करना पड़ेगा। असोसियेशन का सेक्रेटरी यही कहता है।"

"लेकिन उनलोगों ने केवल पिछले सप्ताह कूपों से गाद निकालने के लिए आवासियों से पैसे वसूले थे?" डैडी पूछते हैं।

"कोशिश व्यर्थ हो गई। अब वे दूसरा बोर वेल लगाने की योजना बना रहे हैं और यह जरूरी नहीं है कि पानी निकलेगा ही।" राधिका सब्र के साथ कहती है।

बीना ध्यान से इस बातचीत को सुन रही थी। वह पूछती है, "क्या हमलोग पानी बचाने के लिए कुछ कर सकते हैं, मम्मी?"

"यदि पानी को विवेकपूर्वक खर्च करें तो कई प्रकार से इसकी बर्बादी को रोक सकते हैं। जैसे, दाँत साफ करते समय नल को खुला नहीं रखना चाहिये। नहाते समय हम पानी बचा सकते हैं यदि फुहारा स्नान की जगह बालटी में पानी भर कर नहायें।"

"सचमुच? मुझे नहीं मालूम था।" बीना कहती है। "अब से मैं गंभीरतापूर्वक पानी बचाने की कोशिश करूँगी। मैं अब जानती हूँ, हर बून्द महत्वपूर्ण है।"

If you waste water, then it will also disappear.

Ask your Mummy & Papa not to leave the water flow unnecessarily while shaving, washing the vehicle, washing the utensils or washing the clothes.

Petroleum Conservation Research Association
Sanrakshan Bhawan, 10, Bhikaiji Cama Place, New Delhi 110066.

Write a slogan on Water Conservation and Win Prizes.

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

प्रथम शल्य-चिकित्सक-सुश्रुत

सुश्रुत को हम भारत का प्रथम शल्य-चिकित्सक कह सकते हैं। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में पैदा हुए सुश्रुत के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि ये वैदिक ऋषि विश्वमित्र के वंशज थे। इन्होंने बाराणसी के आश्रम में धन्वन्तरी के चरणों में रह कर चिकित्सा शास्त्र और शल्य शास्त्र का अध्ययन किया था।

उन्होंने अपने ग्रन्थ सुश्रुत संहिता में अपनी शल्य प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया है। संहिता में लगभग २० तीक्ष्ण और १०१ कुन्द औजारों का वर्णन है। इन उपकरणों के नाम उन पशु-पक्षियों पर रखे गये हैं जिनकी आकृति उनसे मिलती-जुलती है। सन, छाल के रेशे तथा पशु की नसें शल्य-सूत्र के रूप में प्रयुक्त की जाती थीं।

सुश्रुत न केवल प्लास्टिक सर्जन थे, बल्कि वे नेत्र-सर्जन तथा मूत्रवैज्ञानिक भी थे।

तुम्हारा प्रतिवेश

मांसाहारी पौधा

क्या भोले-भाले दिखनेवाले पौधे प्राणियों को खा सकते हैं? कुछेक ऐसा करते हैं - जैसे कि पिचर प्लाण्ट या घटपर्णी पौधा। आश्चर्य है, यह तिलचटा, भृंग तथा अन्य कीटों को खा जाता है। जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, इसकी पत्तियों के अन्त में घड़े के आकार की एक थैली होती है। इन थैलियों में एक तरल पदार्थ होता है जो इसके शिकार हुए प्राणियों के पोषक तत्व को सोख लेता है।

घटपर्णी की दो किस्में होती हैं। उनमें आरोही लता, जमीन पर बढ़नेवाली किस्म से भिन्न होती है। भूमि पर होनेवाली किस्म में दो प्रकार के घट होते हैं - भूमि के निकट वाले में चौड़े आधार के घट होते हैं और भूमि के ऊपरवाले में शुण्डाकार आधार के घट।

ढक्कन तभी खुलता है जब घट पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है। जब खुल जाता है तब ढक्कन हिलता - डुलता नहीं, क्योंकि यह मुख से विपरीत दिशा में झुक जाता है। घट के अन्दर गोलाकार छोर पर, हर दाँत के बीच में मकरन्द स्राव ग्रंथि होती है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

एक शानदार प्रदर्शन

कोई नहीं जानता कि ठीक किस वर्ष में चश्मे का आविष्कार हुआ। सन् १२६६ में रोजर बेकन नाम के एक अंग्रेज बौद्ध भिक्षु ने पृष्ठ पर शीशे का एक टुकड़ा रख कर किताब के अक्षरों को बड़ा दिखाने का एक तरीका निकाला था - जिसे आज के चश्मे का पुरोधा कह सकते हैं।

जो भी हो, चश्मे के साथ यदि किसी का चित्र उपलब्ध है तो वह सन् १९३२ में इटली में चित्रित एक कार्डिनल का पोर्ट्रेट है।

जब मुद्रित पुस्तकों का आगमन हुआ तब चश्मे आवश्यक हो गये। सोलहवीं शताब्दी तक उत्तर इटली और दक्षिण जर्मनी में भारी तायदाद में इनका उत्पादन होने लगा।

आजकल बेहतर नज़र के साथ-साथ अन्य उद्देश्यों के लिए भी चश्मों का प्रयोग किया जाता है। काले चश्मे रोशनी की चकाचौंध को कम करने तथा फैशन के लिए पहने जाते हैं। रंगीन चश्मे रात्रि में वायु चालक लगाते हैं। इनफ्रारेड प्रकाश को रोकनेवाले चश्मे भट्ठी कर्मियों के लिए उपयोगी होते हैं।

अपने भारत को जानो

क्या तुम निम्नलिखित संकेतों से संतों और कवियों को पहचान सकते हो?

१. कभी वह डाकू था जो बाद में ऋषि हो गया और उसने एक महाकाव्य की रचना की। उसका मूल नाम रत्नाकर था।

a) नन्दनार b) वल्लुवर
c) वाल्मीकि

२. कृष्ण के एक भक्त ने प्रभु पर अनेक गीत रचे। वह राजस्थान में पैदा हुई। वह कौन थी?

a) शारदा b) अन्दाल
c) मीरा बाई

३. ७० से भी अधिक दर्शन-मतों को एक सन्त द्वारा अद्वैत के रूप में समन्वित किया गया।

a) आदि शंकर b) रामानुज
c) भास

४. किस धार्मिक नेता को लाइट ऑफ एशिया कहा जाता है?

a) श्री रामकृष्ण
b) गौतम बुद्ध
c) रामानुजाचार्य

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

आरती माहेश्वरी,
द्वारा श्री ओम प्रकाश माहेश्वरी,
५६, हरदेव लाला पीपली
रघुवीर निवास, रतलाम - ४५७ ००१.
मध्य प्रदेश

खिलौने की खिलखिलाहट
मुखौटे की मुस्कुराहट

'अपने भारत को जानो' के उत्तर:

१. वाल्मीकि
२. मीरा बाई
३. आदि शंकर
४. गौतम बुद्ध

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

चन्दामामा

(नवम्बर २००४ अंक)

बच्चों का विशेष

बाल लेखकों तथा कलाकारों (छः वर्ष से १५ वर्ष की आयु तक) को अपनी मौलिक कहानियाँ तथा चित्रकलाएँ भेजने के लिए आमंत्रित करता है।

कहानियाँ

- अधिकतम तीन प्रविष्टियाँ
- प्रविष्टि किसी भी भाषा में हो सकती है जिसमें **चन्दामामा** प्रकाशित होता है
- शब्दों की संख्या ५०० से अधिक नहीं
- आकर्षक शीर्षक दो
- श्रेष्ठ प्रविष्टियाँ सभी भाषा-संस्करणों में प्रकाशित होंगी।

चित्रकलाएँ

- अधिकतम तीन प्रविष्टियाँ
- कम से कम 15 x 10 इंच के आकार में
- चित्रकला का विषय भारतीय पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित होना चाहिये - प्रविष्टि के साथ संक्षिप्त सारांश संलग्न होना चाहिये।
- प्रविष्टि के आधार पर चुने जाने पर भाग लेने वालों को कहानियों के चित्रांकन हेतु चेन्नई की यात्रा करने के लिए तैयार रहना चाहिये।
- यात्रा-व्यय दिया जायेगा।

सामान्य

- पासपोर्ट आकार का अपना रंगीन चित्र भेजो
- एक अलग पृष्ठ पर नाम, उम्र (जन्म दिन), कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता पिन कोड के साथ, फ़ोन नं., प्रविष्टि का विवरण दो
- प्रविष्टि के विषय में बिना किसी की सहायता के प्रतियोगी की मौलिक कृति होने का अभिभावक द्वारा प्रमाण पत्र संलग्न होना चाहिये।
- लिफाफे पर लिखा होना चाहिये : **बच्चों का विशेष**

अन्तिम तिथि : १५ सितम्बर २००४

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी,

इक्कादुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.